ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24 अंक - 05 जून-I-2022 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

‘आध्यात्मिकता द्वारा प्रशासन में उत्कृष्टता’ सम्मेलन का सफल आयोजन

राज्यपाल अनुसुईया उइके और मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने दीप जगाकर अखिल भारतीय प्रशासनिक सम्मेलन का किया शुभारम्भ

रायपुर में... प्रशासनिक सम्मेलन के दौरान हस्तियों ने कहा

- सफल प्रशासक बनने के लिए मन में करुणा, स्नेह और आदर का भाव ज़रूरी - राज्यपाल
- मन की शांति हेतु अपनाना होगा अध्यात्म और ध्यान का रास्ता - मुख्यमंत्री

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ ‘शान्ति सरोवर’ रिट्रीट सेंटर में प्रशासकों, कार्यपालकों और प्रबन्धकों के लिए आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर परियोजना के तहत ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा ‘आध्यात्मिकता द्वारा प्रशासन में उत्कृष्टता’ विषय पर सम्मेलन आयोजित किया गया। इस मौके पर राज्यपाल अनुसुईया उइके ने अपने सम्बोधन में कहा कि आप सभी सफल प्रशासक तब बन पाएंगे जब आप में करुणा, स्नेह और आदर का भाव होगा। तभी लोग आपसे बेझिझक अपनी बात कह पाएंगे और उन्हें अपनी समस्या का समाधान मिल सकेगा। प्रशासन को उत्कृष्ट बनाने के लिए नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को प्रशासनिक कार्यप्रणाली का अंग बनाना होगा। राज्यपाल उईके ने कहा कि हम आध्यात्मिकता को जीवन में अपना लें तो देश ही नहीं अपितु संसार की व्यवस्थाएं ठीक हो जाएंगी। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने सम्बोधित करते हुए कहा कि सुखी जीवन के लिए तन और मन का सन्तुलन आवश्यक है। यदि मन सन्तुलित होगा तो हमारे विचारों में उथल-पुथल नहीं होगी। मन शान्त रहेगा तो इससे हमारी कार्यक्षमता बढ़ेगी, जो हमारे स्वयं के लिए, परिवार और समाज के लिए अच्छा रहेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा देश और दुनिया में शान्ति का प्रचार किया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिटेशन रूम में बैठने से ही शान्ति की अनुभूति होती है। आज के दौर में प्रशासकों के लिए आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन सराहनीय पहल है। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायलय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति गौतम चौरड़िया ने कहा कि हरेक व्यक्ति अपने जीवन का प्रबन्धक, प्रशासक व कार्यपालक है। प्रशासकों को अध्यात्म से जुड़ने की सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि जहाँ आध्यात्मिकता होती है वहाँ तेरा-मेरा नहीं रहता, सभी अपने हो जाते हैं। गृह सचिव अरुण देव गौतम ने कहा कि प्रशासक के व्यक्तित्व का प्रभाव प्रशासन पर अवश्य पड़ता है। इसलिए प्रशासन में उत्कृष्टता लाने के लिए अध्यात्म ज़रूरी है। प्रशासक सेवा प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि इच्छा शक्ति के बल पर मनुष्य जो चाहे वह कर सकता है। आज ब्रह्माकुमारीज़ दुनिया के 137 देशों में सेवा कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी यह सदस्य है। यह आध्यात्मिकता से ही सम्भव हो सका। साथ ही उन्होंने कहा कि लगातार काम करते हुए बीच-बीच में मन की शान्ति के लिए मेडिटेशन ज़रूर करें। इस मौके पर कानपुर से आई.ए.एस. सीताराम मीणा, मध्यप्रदेश विधानसभा के प्रमुख सचिव अवधेश प्रताप सिंह, आई.आई.टी. भिलाई के डायरेक्टर रजत मूना, संचालक चिकित्सा शिक्षा डॉ. विष्णु दत्त, ब्र.कु. हरीश भाई,माउण्ट आबू ने भी अपने विचार रखे। इन्दौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी ने शब्दों से सभी का स्वागत किया व भोपाल ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. अवधेश दीदी ने योगानुभूति कराई। संचालन पालम विहार सेवाकेन्द्र,गुरुग्राम की संचालिका ब्र.कु. उर्मिल दीदी ने किया।

छात्रों ने प्रदर्शित की धरती माँ की रक्षा हेतु अपनी भावनायें

मोहाली-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ के सुख शांति भवन में पृथ्वी दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मोहाली के पाँच विभिन्न स्कूलों के एक सौ पचास छात्रों ने भाग लिया। इस मौके पर ब्र.कु. शशि बहन ने छात्रों को ‘बाह्य परिस्थितिकी तंत्र’ और इसके संरक्षण के तरीकों के बारे में बताया। इसके साथ ही उन्होंने ‘आंतरिक परिस्थितिकी तंत्र’ से इसे जोड़ते हुए विचारों की शक्ति से इसे सशक्त बनाने की विधि बताई। ब्र.कु. अदिति बहन ने छात्रों को राजयोग ध्यान के मूल सिद्धान्तों के बारे में तथा यह कैसे दोनों प्रकार के परिस्थितिकी तंत्र को बढ़ाने में हमारी मदद कर सकता है ये बताया। ब्र.कु. प्रेम दीदी,प्रभारी,ब्रह्माकुमारीज़,मोहाली-रोपड़ सर्कल ने सुखी जीवन के लिए नैतिक मूल्यों को अपनाने के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने इस खूबसूरत ग्रह की रक्षा के लिए पूरे ब्रह्माण्ड के लिए अच्छी भावनाएं और अच्छे वायब्रेशन्स पैदा करने पर ज़ोर दिया। इस मौके पर छात्रों के लिए धरती माता के बारे में प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। प्रतियोगिता में छात्रों ने सुंदर पोस्टर बनाए जो हमारी धरती माँ को बचाने और हमारी आने वाली पीढ़ियों को हरा-भरा वातावरण प्रदान करने का संदेश देते हैं। इस मौके पर छात्रों ने प्राकृतिक संसाधनों को बचाने का संकल्प भी लिया।

बुंदेलखंड शहीद श्रद्धांजलि साइकिल मैराथन में शामिल होकर ब्रह्माकुमारी बहनों ने दिया विश्व शांति का संदेश

छतरपुर-म.प्र.। बुंदेलखंड के जलियांवाला बाग शहीद दिवस के अवसर पर जलियांवाला बाग चरण पादुका स्थल पर शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए व पर्यावरण संरक्षण के साथ ऐतिहासिक विरासत को जानें, इसके लिए चरण पादुका सेवा समिति, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी उत्तराधिकारी संगठन एवं महर्षि विद्या मंदिर विद्यालय द्वारा ‘शहीद श्रद्धांजलि साइकिल मैराथन’ का आयोजन किया गया। इस साइकिल मैराथन में 28 ब्रह्माकुमारी बहनों ने शामिल होकर ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व किया। यह यात्रा छतरपुर जिले से लगभग 40 कि.मी. दूर सिंहपुर चरण पादुका ग्राम जहां पर शहीदों

के स्मारक बने हुए हैं उस स्थान के लिए रवाना हुई। इस मौके पर समाजसेवी शंकरलाल सोनी ने बताया कि हर वर्ष 14 अपैल का दिवस बुंदेलखंड के जलियांवाला बाग शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है और आज इस विशेष कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ का सहयोग सराहनीय है। इस शुभ अवसर पर साइकिल यात्रियों को हरी झंडी दिखाने के लिए डीआईजी विवेक राज सिंह, कलेक्टर जीआर संदीप, एडीजे अनिल पाठक, सीएमएचओ डॉ. विजय पथोरिया, महर्षि विद्या मंदिर प्रिंसिपल चंद्रकांत शर्मा, केन्द्रीय विद्यालय प्रिंसिपल बिशन सिंह राठौर, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी उत्तराधिकारी चरण पादुका सेवा समिति से शंकर लाल सोनी सहित ब्र.कु. शैलजा बहन, ब्र.कु. माधुरी बहन, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. रमा बहन आदि उपस्थित रहे।

नि :शुल्क नेत्र जाँच शिविर का सैकडों लोगों ने लिया लाभ

भीनमाल-राज.। दासपा के राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन दिवंगत श्रीमति पवनी देवी पारसमल सोनी की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में सोनी परिवार की तरफ से हुआ। ब्रह्माकुमारीज़ भीनमाल द्वारा यह 124वां नेत्र चिकित्सा शिविर था। जिसमें 358 मरीजों की आँखों की जांच हुई एवं 42 मोतियाबिंद के मरीजों का चयन कर जालौर हॉस्पिटल भेजा गया। इस कैम्प के उद्घाटन अवसर पर दानदाता पारसमल सोनी, दासपा सरपंच विरेंद्र सिंह राठौड़, उपसरपंच दिनेश पुरोहित, दैनिक भास्कर के पूर्व संवाददाता एवं राजनेता श्रवण सिंह राठौड़, कोरा ग्राम के सरपंच खेमराज देसाई आदि उपस्थित रहे। इस मौके पर ब्र.कु. गीता बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़ ने सभी को मानव सेवा का अवसर लेकर पुण्य प्राप्त करने की प्रेरणा दी। साथ ही आँखों की जाँच के विषय में मार्गदर्शन भी दिया एवं दानदाता परिवार का सम्मान भी किया। श्रवण सिंह राठौड़ ने माता-पिता की सेवा कर सत्कर्म में धन इस्तेमाल करने वालों का धन्यवाद किया। इस कैम्प में जालोर स्थित ग्लोबल फतेह आई हॉस्पिटल की टीम ने सेवाएं दीं। साथ ही प्रकाश सोनी, महेन्द्र सोनी एवं परिवार ने भी सभी की सेवाएं की तथा जालोर अस्पताल के आई केयर मैनेजर ललित ने गर्मी के समय में आँखों की हिफ़ाजत कैसे करनी है और ऑपरेशन के बाद कैसे सावधानी रखनी है, इस बारे में विस्तारपूर्वक बताया।

करुणा और दया में अपने को भी करें शामिल

भारत की परंपरा में बच्चा जब पढ़-लिखकर योग्य हो जाता है, तब वो अपने पिता के व्यवसाय को सम्भालता है। एक तरह से मानो कि वो पिता का स्थान ग्रहण कर लेता है और पिता की जो धरोहर है उसको आगे बढ़ाने का मुख्य कारक बनता है। ठीक इसी तरह हम सभी भी हमारे प्राणप्रिय परमपिता परमात्मा के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए निमित्त हैं। करीब आठ-नौ दशक पूर्व आरंभ किये गये परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य को हमने उनके सानिध्य में रहकर सीखा है, समझा है और उस कार्य को सम्पन्न करने की योग्यता भी प्राप्त की है। हम भाग्यशाली हैं कि इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए वे सदा हमारे साथ हैं और सदा समयांतर हमें गाइड भी कर रहे हैं। यह बड़ी ही खुशी की बात है हमारे लिए। आज चारों ओर ऐसा माहौल है जहाँ मुसीबत, मुश्किलातों के पहाड़ हैं, विघ्नों का अंबार है, किंतु परमात्मा हमारे साथ होने के कारण वो हमारे उमंग-उत्साह को कभी कम होने नहीं देता। हम भी एक बल, एक भरोसे के सहारे कार्य की सम्पन्नता की ओर अग्रसर हैं।

ब्र.कु. गंगाधर

आज विश्व के हर कोने में उथल-पुथल, विनाश, लड़ाई एवं दु:ख के पहाड़ मनुष्य के सामने चुनौतियों के रूप में हैं। ऐसे में हम सबकी ज़िम्मेवारी व उत्तरदायित्व है कि हम सब दुखियों का, नि:सहाय का सहारा बनें। इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए ब्रह्माकुमारी संस्थान की वार्षिक मीटिंग में इस वर्ष को 'करुणा एवं दया का वर्ष' के रूप में मनाने का निश्चय किया गया है। इस अम्ब्रेला थीम के अंतर्गत देश तथा विदेश के हरेक मनुष्य आत्माओं को सुख-शांति की अंचली देना है। आज चारों ओर हर कोई लेने की आश से खड़ा है क्योंकि किसी का तो इस महामारी में जीवन ही अस्त-व्यस्त हो गया, किसी ने अपनों को खोया तो नि:सहाय हो गया। मंदी के दौर ने मनुष्य की बुद्धि का ही दिवाला निकाल दिया। वो समझ नहीं पा रहा है कि क्या करे, कैसे करे, कैसे जीये! इस महामारी से उबरने की कोशिश कर ही रहे थे कि एक ओर वैश्विक लड़ाई ने मनुष्य की कमर ही तोड़ दी।

अब हम करुणा और दया वर्ष के सम्बंध में समझने की कोशिश करते हैं कि इस भगीरथ कार्य को कौन कर सकता है व कैसे कर सकता है। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए कौन योग्य है, क्या पात्रता होनी चाहिए, इसके बारे में समझते हैं। दु:खी, अशांत और असंतुलन का मुख्य कारण है मनुष्य का भटकता मन। अब जबकि हमें परमात्मा के कार्य की ज़िम्मेवारी पूर्ण करनी है, तब हमें मुख्यत: चार बातें अपने जीवन से पूर्णत: समाप्त कर देनी ही होंगी। अगर ये चार बातें होंगी तो हम किसी पर भी करुणा व दया नहीं कर पायेंगे। वो चार बातें हैं- अलबेलापन, ईर्ष्या, घृणा और नफरत। सबसे पहले हम अलबेलापन क्या है उसको सूक्ष्मता से समझने की कोशिश करते हैं। साधना के पथ पर चलते हुए अपने आप में झांककर हमें इसे जड़-मूल से समाप्त कर देना होगा। अलबेलापन हमारे पुरुषार्थ में सबसे बड़ा बाधक है। जैसे कि हम एक-दूसरे को देखते हैं, उसमें कोई कमी है, उसको ग्रहण कर लेते हैं। कई बार तो हम आश्चर्य से देखते हैं कि ये इतने साल से ज्ञान में चल रहे हैं, प्रभु-पालना में पल रहे हैं, फिर भी ये क्रोध करते हैं! तो हमने तो अभी ही ज्ञान मार्ग अपनाया है, हम कौन-सी खेत की मूली हैं! जब अभी तक वे भी नहीं कर पाये, तो हम भी कभी न कभी कर लेंगे। समय रहते हम भी सम्पन्न हो जायेंगे। लेकिन परमात्मा ने हमें पहले ही बता दिया है 'सी फादर ऑनली, न कि ब्रदर-सिस्टर'। देखो, अगर हम इस आज्ञा का पालन नहीं करते तो हम प्रभु प्यार से वंचित हो जाते हैं और हम दूसरों को मदद करने व देने में असमर्थ हो जाते हैं।

इसी तरह अगर हमारे में ईर्ष्या है तो भी हम किसी को देने में समर्थ नहीं होंगे। क्योंकि ईर्ष्या के बारे में आप सभी जानते ही हैं कि ईर्ष्या वो चीज़ है जो प्रभु परिवार में भी कोई उनसे आगे बढ़ता है तो उसे देख नहीं सकते। और यही सोच उनके जीवन को दीमक की तरह खोखला कर देती है। इसी तरह घृणा वाला मनुष्य कैसे किसी पर रहम कर सकेगा! घृणा व नफरत वो चीज़ है जो यदि किसी ने किसी मनुष्य के बारे में सुना है कि फलाने व्यक्ति का चाल-चरित्र ठीक नहीं है, धोखेबाज़ है, दु:खदायी है, झगड़ालू है, तो उसे देखते ही उसके मन में घृणा पैदा होती है, नफरत पैदा होती है। तो जहाँ घृणा व नफरत मन में है, तो वो भला शुभ-भावना, शुभ-कामना दूसरों के प्रति कैसे कर पायेगा! तो ये चारों चीज़ें यदि अभी भी हमारे जीवन में हैं तो 'परमात्म-सेवा योजना- करूणा और दया' को सम्पन्न करने में हम कैसे सहयोगी बन सकेंगे! क्योंकि समय बहुत नाजुक भी है और बहुत थोड़ा भी। ऐसे वक्त पर हमें स्वयं को इन चीज़ों से बचाना भी है और परमात्मा द्वारा प्राप्त सर्वशक्तियों एवं सर्व खज़ानों से सम्पन्न भी बनना है। बिना सम्पन्नता के हम देने के अधिकारी नहीं हो सकेंगे। तो आइये, हम अपने आप को साक्षी होकर देखें, चेक करें, तीव्रता से स्वयं को चेंज करें और परमात्मा की आशाओं और उम्मीदों को पूरा करें।

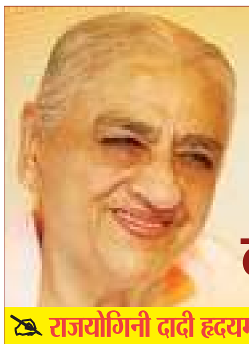

हमें सिर्फ कर्मकर्ता नहीं... कर्मयोगी बनना है

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कई आत्मायें कहती हैं कि जितना समय हम याद में रहना चाहते हैं उतना समय याद ठहरती नहीं है, तो बाबा कहते हैं दो बातें अपने मन में ज़रूर याद करो कि बाबा ने क्या से क्या बनाया है और क्या-क्या दिया। तो प्राप्ति कराने वाला कभी भूलता नहीं है। कल क्या थे और आज क्या बन गये? इसकी बहुत लम्बी लिस्ट बनाके अपने सामने रखो, तो याद कभी भूल ही नहीं सकती। प्राप्तियों को याद करने से खुशी होती रहेगी। सतयुग में भी इतनी प्राप्तियां नहीं होंगी जितनी इस समय संगम पर हमें बाबा से होती हैं। सम्बन्ध भी मिलता है, सम्पत्ति भी मिलती है। इस समय के महत्त्व को जानो और इस समय रूपी खज़ाने को विधिपूर्वक कार्य में लगाओ तो जमा का खाता बढ़ेगा। ऐसे ही हम सर्व शक्तियों के मास्टर सर्वशक्तिवान हैं तो शक्तियों को जैसे और जब भी यूज़ करना हो वैसे कर सको तो उसका महत्त्व और बढ़ता है। जिस शक्ति को हम ऑर्डर करते हैं वो शक्ति हाज़िर हो जाये इसको कहा जाता है मास्टर सर्वशक्तिवान। अगर कोई चीज़ समय पर काम में नहीं आती है तो वो चीज़ होते भी क्या फायदा?

तो चेक करो कि श्रेष्ठ संकल्प द्वारा व्यर्थ समाप्त हो जाता है? क्योंकि व्यर्थ बहुत फास्ट नुकसान करता है अगर व्यर्थ चलता रहा तो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान कैसे हूँ? परिवर्तन की शक्ति मेरी समय पर यूज़ ही नहीं होती है तो मैं मास्टर कैसे हूँ! तो यह अभ्यास करना चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ वो सोच ही चलती रहे कि होना तो चाहिए, हुआ नहीं, एक दिन लग गया, दो दिन लग गया। और बाबा ने तो इशारा दिया है कि कोई भी समय किसी का भी अचानक कुछ भी हो सकता है। तो अचानक शब्द को ध्यान में रखते हुए एवररेडी बनके तैयार रहो। फिर तो बस, बाबा ने बुलाया चला गया, ऐसे हो जायेगा। ऐसे एवररेडी हम सबको बाबा बनाना चाहता है। तो हमसे जो बाबा चाहता है वही तो हम बच्चों को करना है। इसी एक धारणा से ही तो मम्मा नम्बरवन में चली गयी।

हमें सिर्फ कर्मकर्ता ही नहीं बनना है, कर्मयोगी बनना है। दुनिया में कर्मकर्ता तो बहुत हैं। कर्मयोगी बनके कर्म करना माना कर्म को एकाग्रता से करना। एकाग्रता माना योग। योग में रहकर के कर्म करने से हर कर्म श्रेष्ठ होगा, सफल होगा। योगी जीवन की आदत भी पक्की हो जायेगी। तो मन की एकाग्रता से बाबा को याद करते रहें और हाथों से कर्म करते रहें तो अन्तिम एक सेकण्ड के पेपर में पास हो सकेंगे। बाप समान बन जायेंगे। तो दिल से कहे बाबा, तो चेहरा एकदम खिल जाये, ऐसी अवस्था अपनी बनानी है। तो बाबा को ऐसा खुश किस्मत वाला खुशनुम: चेहरा दिखायेंगे ना!

हमें कभी भी अन्दर से रेस्टलेस नहीं होना है

राजयोगिनी दादी जानकी जी

अभी हमें अन्दर से डीप पुरुषार्थ करके अपने संकल्पों में शांति लानी है, प्रेम सम्पन्न बनना है। ज्ञान कहता है अन्दर की खुशी हो, शक्ति हो। अपने ही संकल्पों की गहराई में जाओ तो युद्ध का संस्कार समाप्त हो जायेगा। कोई कारण भी बने तो भी विजयी बनो, योद्धे नहीं बनो। अब छोटी-छोटी बातों को बड़ा बनाकर लड़ते-झगड़ते नहीं रहो। संकल्प को शुद्ध और शांत रखने की आदत डालो।

ब्राह्मण हूँ, स्वदर्शन चक्रधारी हूँ, तो संकल्प धीरे-धीरे चलेंगे, ज़रूरी काम के संकल्प आयेंगे। नहीं तो शांत रहेंगे। अन्दर के पुरुषार्थ में शांति रहे तो संकल्पों को नियंत्रित रख सकते हैं। बोलते, करते सबको अच्छा-अच्छा कहके अन्दर शांत रहना है। अन्दर की शांति हमारे रूट में (जड़ों में) चली जाये, मेरे में ज़रा भी अशांति न हो।

संकल्पों में अगर शांति, शुद्धि होगी तो वो वायब्रेशन पहुंचेंगे। कलह वाले नहीं होंगे, मिलनसार होंगे। मुस्कुराहट भी ऐसी होगी, जो खुश हो जायेंगे। अगर अन्दर चला गया तो फल अच्छा निकलेगा, जिसको कहा जाता है सफलता। संकल्प में, वाणी में, चाहे कर्म में, सम्बन्ध में सफलता होगी। ऐसे अन्दर ही अन्दर अपने संकल्प की उत्पत्ति शांति वाली हो, स्नेह वाली हो। कुछ काम वाले संकल्प हों, अच्छी वृत्ति से अच्छा वायब्रेशन फैलायें।

बाबा का एक बोल सदा याद रहता है सी फादर, फॉलो फादर। यह आँखें बाबा को देखने के लिए हैं। अगर आँखें इधर-उधर होंगी तो फॉलो नहीं कर सकेंगे। मुझे अन्दर लगन है, इच्छा है सिर्फ फॉलो फादर करने की। योग शिवबाबा से लगाना है लेकिन फॉलो ब्रह्मा बाबा को करना है। यह बाबा कैसे कर्म कर रहा है, स्थापना का इतना बड़ा कार्य है, फिर भी उन्हें कोई जवाबदारियां थकाती नहीं हैं। हमारी ज़िम्मेवारी है सिर्फ अपनी स्थिति अच्छी रखने की।

हर बात में बाबा को देखो, बाबा पत्र लिख रहा है तो भी कहेगा बाबा लिख रहा है। बाबा भण्डारे में जायेगा तो भी कहेगा बाबा के भण्डारे में जा रहा हूँ। तो सदा ही बाबा को याद रहा कि यह शिवबाबा का यज्ञ है। कभी मेरा नहीं कहा। मिस्टेक तब होती है जब मेरा कहते हैं। मेरापन भारी करता है। मैं पन का अभिमान थका देता है। अभी हमें कभी भी अन्दर से रेस्टलेस नहीं होना है।

बाबा बच्चों की कोई भी कमी न सुनता है, न देखता है, सिर्फ अपना काम करता है। हम सुनते देखते हैं तो भविष्य थोड़े ही याद रहेगा! बाबा बच्चों को भी याद दिलाता है बच्चे विनाश के पहले सतयुगी राजधानी बनानी है। यह पुरानी दुनिया खत्म हुई पड़ी है, सिर्फ आप बच्चे तैयार हो जाओ।

बाबा की आकर्षण तब हो जब बाहर की बातों से अन्तर्मुख हों...

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

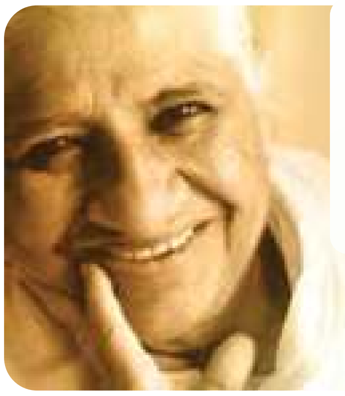

ज्ञान हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई को बुद्धि में धारण करना है और जितनी ज्ञान की गहरी प्वाइन्ट्स बुद्धि में धारण होंगी उतना ही बुद्धि फिर दिल से बाबा के शुक्रिया का गीत गायेगी।

सेकण्ड में इस देह की स्मृति से परे जा सकते हो? क्योंकि हम राजयोगियों का जो अपने इस योग का अनुभव है- वो है यहाँ बैठे-बैठे सेकण्ड में अपने वतन में उड़कर पहुंच जायें। जब संदेशियां उड़कर जा सकती, वह तो ट्रान्स है। हम बुद्धिबल से अपने फरिश्तों की अव्यक्त दुनिया में बाबा से मिलन मनाने उड़ जाएं। इस शरीर में अशरीरी न्यारे बन, उसी फरिश्तों की दुनिया में, लाइट की दुनिया में अव्यक्त बाबा के सामने मिलन मनायें, तो इस जैसा अतीन्द्रिय सुख कोई नहीं है। यह दिल के अनुभव का गीत वही गा सकते जो इसकी प्रैक्टिस करते और बराबर उस परम आनन्द का अनुभव करते हैं।

गोपियों का जो अतीन्द्रिय सुख गाया हुआ है, वह प्रैक्टिकल में हम राजयोगियों के सुख का ही गायन है। जितना इस देह से न्यारे बन आत्मा निश्चय कर बाबा से मिलन मनाते हैं तो इस मिलन से बाबा सर्वशक्तियां भर देता, जिसको ही तपस्या कहा जाता है। यही राजयोग है। इसका निरन्तर अभ्यास चाहिए, भट्ठी चाहिए।

हमने देखा है जिनको इस याद का, योग का अनुभव है, उनकी बुद्धि सहज ही दुनिया की सर्व बातों से हट जाती है और ऐसी प्रैक्टिस करने वालों की दृष्टि में शक्ति रहती है क्योंकि वृत्ति में एक बाबा ही रहता है। स्वयं को बाबा के साथ कम्बाइंड देखते। जब तक इस योग की अनुभूति गहरी नहीं करेंगे तब तक शक्तियां नहीं मिलेंगी। जो भी पॉवर्स हैं वो इस योग साधना से मिलती हैं। इस साधना से माया पर विजयी बन सकते हैं।

ज्ञान हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई को बुद्धि में धारण करना है और जितनी ज्ञान की गहरी प्वाइन्ट्स बुद्धि में धारण होंगी उतना ही बुद्धि फिर दिल से बाबा के शुक्रिया का गीत गायेगी। और जितना याद की यात्रा करेंगे उतना अपने को वरदानों से भरपूर अनुभव करेंगे क्योंकि यह याद ही हमें वरदाता बाप से वरदान दिलाती, इसी से समीप हो जाते हैं। फिर दिल से गीत निकलता बाबा आपको पाकर हमने तो जहान पा लिया। ऐसी लगन वाले ही सच्चे आशिक बन माशुक की याद में रहते हैं।

निराकारी दुनिया तो परमधाम है लेकिन अव्यक्त वतन, सूक्ष्मवतन यह हमारे संगम की विशेषता है। उसका हरेक को अनुभव चाहिए, जहाँ से बाबा हमें मिलने आते हैं। तो इसके लिए जितनी-जितनी बुद्धि बाहर की बातों से अन्तर्मुख होगी, उतना ही बाबा की आकर्षण रहेगी। सचमुच हमें भगवान की आकर्षण हो रही है- यह अनुभव होना चाहिए। जैसे कई बार बाबा कहते कि बांधेलियों को बाबा से मिलने की आकर्षण होती कि कहाँ छुट्टी मिले तो हम बाबा से, भगवान से मिलने के लिए भागूँ। जैसे दु:ख में सिमरण सब करें वैसे बांधेलियों पर बन्धन हैं तो वह जास्ती याद करती हैं, आप लोग छुटेले हैं तो मस्त रहते हैं। अच्छा है, मौज है, मस्त रहते यह भले अच्छा है लेकिन लगन एक अलग चीज़ है। वह ऐसी लगन होती जो रात को नींद उड़ जाती और मन कहता बाबा के पास जाके बाबा से रूहरिहान करते रहें। यही है रूहानियत की यात्रा। तो सदा ऐसी रूहानी यात्रा की रूचि रख बाबा से मिलन की अनुभूति करनी और करानी है।

हर परिस्थिति में स्थिरता बनाए रखता राजयोग

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

राजयोग का अभ्यास ही सुखदाई और मधुर है। परन्तु यदि राजयोग का अभ्यास करते हुए मन में अनायास ही कोई व्यर्थ संकल्प आ जाये तो उससे चिन्तित नहीं होना चाहिये। उसके निवारण के लिये दो ही तरीके हैं- एक तो यह कि उससे परेशान न होइये, मन को हल्का रखिये। दूसरा निराशा अनुभव न कीजिये। आप हल्के मन से फिर ईश्वरीय चिन्तन करने का पुरूषार्थ कीजिये। जैसे लोहे को लोहा काटता है, वैसे ही संकल्प को भी संकल्प ही काटता है। अतः उन अशुद्ध संकल्पों को काटने का सर्वोत्तम तरीका है- मन को शुद्ध संकल्पों में व्यस्त कर देना। वरना, यदि कोई इन संकल्पों में उलझ जाता है कि पता नहीं मेरा मन टिकता क्यों नहीं, मेरे व्यर्थ संकल्प मिटते क्यों नहीं, तो एक व्यर्थ चिन्तन तो हो ही रहा था, अब उस चिन्तन के बारे में भी चिन्तन प्रारम्भ होगा तो इस श्रृखंला का अन्त कहाँ होगा? अतः इन संकल्पों के स्थान पर ज्ञानमय संकल्प शुरू कर दीजिये।

राजयोग अभ्यास करते समय यदि अनायास ही मन किसी कारण से पुनः वहाँ से हट जाये तो उसे पुनः परमपिता परमात्मा के परिचय आदि के मनन-चिन्तन में लगा देना चाहिये ताकि स्थिति फिर से स्थूल न हो जाये। उदाहरण के तौर पर इस प्रकार का मनन कीजिये-"यह संसार तो एक मुसाफिर-खाना है। अब इस कलियुगी सृष्टि में कोई भी आसक्ति रखने की मेरी चेष्टा नहीं है... शिव बाबा, अब मेरी प्रीति तो आप ही से है जो कि मुझे परमधाम तथा वैकुण्ठ में ले चल रहे हैं, मुझे मार्ग-प्रदर्शना दे रहे हैं... मेरा वर्तमान जन्म तो अन्तिम जन्म है, अब मैं सृष्टि मंच पर अपना पार्ट पूरा कर चुका हूँ अब मेरा पार्ट स्वयं परमपिता परमात्मा शिव के साथ है... शिव बाबा, आप तो अवढर दानी और भोले भण्डारी हैं... आपने मुझे ज्ञान तथा योग रूपी वरदान दिये हैं जिनसे कि सभी प्राप्तियाँ हो जाती हैं... शिव बाबा, आप तो सचमुच बड़े हितैषी एवं अपार सुख-शान्ति देने वाले हैं, अतः मैं आपको हृदय से बहुत ही प्यार करता हूँ..आप तो बिगड़ी को बनाने वाले हैं, अतः मैं आपको हृदय से बहुत ही प्यार करता हूँ... आप तो बिगड़ी को बनाने वाले और माया की गहरी नींद में सोये हुए को जगाने वाले हैं। मुझे भी आप दलदल से निकालकर पावन बना रहे हैं और 21 जन्मों के लिये स्वर्ग के राज्य-भाग्य के अधिकारी बना रहें हैं... आप तो बहुत ही कमाल करते हैं कि एक जन्म में सहज ज्ञान तथा सहज राजयोग द्वारा पतित नर को पूज्य श्री नारायण तथा नारी को पूज्य श्री लक्ष्मी बना देते हैं... अतः मैं आपके उच्च कर्त्तव्य की कैसे सराहना करूँ? शिव बाबा, अब तो मैं भी दूसरों को आपकी वाणी सुनाऊंगा, उन्हें माया की नींद से जगाऊंगा तथा आपका मधुर परिचय देकर हर्षाऊंगा। शिव बाबा, अब मैं कभी भी विकर्म नहीं करूँगा बल्कि आपकी आज्ञानुसार चलकर अपना जीवन श्रेष्ठ बनाऊंगा...।" इस प्रकार का मनन-चिन्तन करते-करते पुनः एकाग्रता पूर्वक शान्ति, शक्ति, प्रेम की धारा को धारण करते जैसे अनुभव में समाहित हो जाना चाहिए।

अशुद्ध संकल्पों का निवारण

यदि ये ज्ञान-युक्त चिन्तन भी नहीं हो पा रहा, मन में खलबली-सी मची हुई है, चित्त में भारीपन-सा है, आलस्य है या मानसिक उद्दण्डता एवं उद्विगनता है तो ज्ञान का अंकुश प्रयोग कीजिये। हमने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, या इन्द्रिय आकर्षणों से होने वाले नुकसान को भली-भांति समझा है। उसको ध्यान में रखते हुए, जिस प्रकार के संकल्प मन में उठ रहे हों, उनका निवारण करने के लिये, उन्हें शान्त करने वाले ज्ञान-बिन्दुओं का मनन कीजिये। इस प्रकार की ज्ञान-गवेषणा से कुछ ही दिनों में आपके वे अशुद्ध संस्कार धीमे अथवा 'तनु' होते जायेंगे और क्षीण होते-होते, अन्तोगत्वा आपका पीछा छोड़ जायेंगे।

इस प्रसंग में एक बात को मन में पक्का कर लीजिये। वह यह कि कभी अपने पुरूषार्थ से निराश न होइये। निराशा आने से आलस्य और प्रमाद अथवा अलबेलापन आता है और उसका दुष्परिणाम यह होता है कि मनुष्य अभ्यास करना ही छोड़ देता है। यह बहुत हानिकारक है। निराशा का तो कोई कारण नहीं है क्योंकि पुरूषार्थ कभी भी शत-प्रतिशत निष्फल तो जाता नहीं। कर्म तो अविनाशी है, उसका प्रभाव चाहे कितना भी क्षीण क्यों न हो, पड़ता अवश्य है। क्या प्रायः यही नहीं देखते कि किसी दीवार को गिराने के लिये मिस्त्री या मज़दूर द्वारा अनेकानेक हथौड़े लगाने पड़ते हैं। पहले एक-दो हथौड़े से यद्यपि दीवार नहीं गिरती तो भी मिस्त्री हथौड़े लगाना छोड़ नहीं देता क्योंकि वह जानता है कि हथौड़े का हरेक प्रहार अपना काम कर रहा है। वह दीवार को कमज़ोर करता जा रहा है। यद्यपि दीवार अन्तिम हथौड़े के मार से गिरेगी तथापि उससे पहले की चोटें भी महत्त्वपूर्ण हैं- वे व्यर्थ नहीं हैं ठीक इसी प्रकार, हमारे प्रतिदिन का योगाभ्यास महत्त्वपूर्ण है। आज यदि किन्हीं विक्षेपों के कारण मन स्थित नहीं हो सका तो निराश होने की कोई बात नहीं क्योंकि हमारा हरेक संकल्प रूपी हथौड़ा हमारी कालिमा की दीवार को ढाने में महत्त्वशाली है।

दिनचर्या पर ध्यान

अभ्यास के प्रसंग में एक महत्त्वपूर्ण बात और भी कह दें। जब हम योगाभ्यास के लिये बैठते हैं, तो तन को तो एक स्वच्छ एवं आरामदायक आसन पर बिठा देते हैं परन्तु हमारे मन का आसन तो हमारे दिन भर के संकल्प-विकल्प ही होते हैं। हमारा मन उसी भूमिका में ही आगे चलता है। अतः उस भूमिका को ठीक करना ज़रूरी है। जो मनुष्य दिन-भर देह-अभिमानी हुआ रहता है, देह-दृष्टि से ही सभी को देखता है, प्रभु को रिंचकमात्र भी याद नहीं करता, उसे योगाभ्यास के समय ईश्वरीय स्मृति में तन्मयता की स्थिति प्राप्त करने में बहुत समय लग जाता है। परन्तु जो मनुष्य दिन-भर भी आत्म चेतस रहता है, सभी को आत्मिक दृष्टि से देखता है, उसकी स्थिति स्थूलता एवं लौकिकता से ऊपर उठी रहती है और ईश्वरीय याद की यात्रा पर चलने में उसे अधिक समय नहीं लगता। बिजली का स्विच ऑन करने की न्यायीं वह सहज रीति से ही ईश्वरीय स्मृति में टिक जाता है।

मुम्बई-मुलुंड। राजभवन में आयोजित सम्मान समारोह में महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. गोदावरी दीदी को 'समाज रत्न पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए। गौ रक्षा फाउण्डेशन एवं अन्याय निवारण निर्मला समिति की ओर से आयोजित इस समारोह में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में विशेष कार्य करने वाले 31 विशेष लोगों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर फाउण्डेशन के अध्यक्ष राजू सुदाम शेठ, संयोजक डॉ. प्रमोद पाण्डे, आयोजक विशा पराडकर एवं कृष्णा, नीता बाजपेयी तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

खजुराहो-म.प्र.। खिलाड़ियों के लिए आयोजित 'विधायक कप' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक कुंवर विक्रम सिंह जूदेव, ब्र.कु. विद्या बहन, योगा शिक्षक भारत भूषण सिंह, सचिव राम कुमार गुप्ता तथा अन्य।

बेंगलुरु-टी दसरहल्ली(कर्नाटक)। प्रजाहित संरक्षण ट्रस्ट व कन्नड़ एवं संस्कृति एलके के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में संतोष हेगड़े,भारत के पूर्व सॉलिसिटर जनरल,लोकायुक्त की गरिमामय उपस्थिति में ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमा बहन को 'रत्नश्री' राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत आयोजित 'महिला सशक्तिकरण अभियान' का शिव ध्वज दिखाकर शुभारंभ करते हुए उपखंड अधिकारी राजेश मेवाड़ा। साथ हैं ब्र.कु. लता बहन, ब्र.कु. नीलम बहन, न्यायालय परिसर अधिकारी तथा स्टाफ।

लैलूंगा-रायगढ़(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत 'द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन झाँकी' के उद्घाटन कार्यक्रम में चक्रधर सिंह सिदार,विधायक,लैलूंगा, सुरेन्द्र कुमार बापोडिया,मुन्ना सेठ, छमेश्वर लाल पटेल,सेवानिवृत्त जज, ब्र.कु. राधिका बहन,सहसंचालिका,रायगढ़ एवं जशपुर जिला, ब्र.कु. नीलू बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

कोरबा-टी.पी. नगर(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के सद्भावना भवन में होम्योपैथिक के जनक डॉ. हनीमन के जन्मोत्सव पर डॉ. वी. मिश्रा,उपाध्यक्ष,इंडियन ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ होम्योपैथी, डॉ. राज नारायण,उप सचिव, डॉ. रीतेश सुनहरे व डॉ. रोशनी सिंह के सानिध्य में आयोजित 'निःशुल्क होम्योपैथी स्वास्थ्य शिविर एवं परिचर्चा' में डॉ. के.सी. देबनाथ, ब्र.कु. रुकमणी बहन, ब्र.कु. बिन्दु बहन, भोखरराम भाई सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे। लगभग सौ मरीज़ों ने शिविर का लाभ लिया।

बसना-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्रा' का शुभारंभ ब्र.कु. चंद्रकला बहन, गजेंद्र साहू,नगर पंचायत अध्यक्ष, ब्र.कु. भुवनेश्वरी बहन, ब्र.कु. पूनम बहन व अन्य ब्र.कु. बहनों द्वारा किया गया।

इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा उषाराज ऊर्जा,पेट्रोल पम्प,महूनाका में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के ट्रांसपोर्ट एंड ट्रैवल विंग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. अनीता बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन, सुदर्शन गुप्ता,पूर्व विधायक, पम्प संचालक धीरज गर्ग तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत 'मेरा भारत स्वस्थ भारत' अभियान के तहत आयोजित 'निःशुल्क नेत्र जाँच शिविर' में नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. कपिल खुराना ने सभी के नेत्रों की जाँच करते हुए नेत्रों के देखभाल की विधि बताई तथा निःशुल्क आई ड्रॉप व दवाइयां वितरित की। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन ने भी अपने विचार रखे। शिविर का 350 लोगों ने लाभ लिया।

दल्ली राजहरा-छ.ग.। आध्यात्मिक कार्यक्रम में सोमनाथ की चैतन्य झांकी का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर करते हुए महिला एवं बाल विकास, समाज कल्याण मंत्री अनिला भेड़िया, नगर पालिका अध्यक्ष शिबूनायर, ब्र.कु. पूर्णिमा बहन तथा अन्य।

राजयोग से बनता सकारात्मक नज़रिया

परिस्थितियां तो अनेक आती हैं और आती रहेंगी। और अंत में भी बहुत सारी परिस्थितियां आयेंगी, लेकिन परिस्थिति के वक्त ज्ञान स्वरूप बनने की बात नहीं होती है इसका अभ्यास पहले से करना होता है। मान लो आपके अन्दर गुस्से की कमज़ोरी है और यदि आप बहुत जल्द गुस्से के वश हो जाते हैं, परिस्थिति आयेंगी और उस वक्त आप सोचो कि मैं ज्ञान स्वरूप हो जाऊं, मैं शांत हो जाऊं ये नहीं होगा। पहले से उसका अभ्यास छोटी-छोटी बातों में करते जाओ।

विशेष रूप से अभ्यास करना है ड्रामा की प्वाइंट बाबा ने हमें दी है और हमेशा बाबा ने बताया है कि बच्चे ड्रामा कल्याणकारी है जो होता है कल्याण के लिए ही होता है। तो छोटी-छोटी बातों में उसे अप्लाई करना(लागू करना) शुरु करो। जैसे ही हम कुछ बात देखते हैं मान लो भोजन आपके सामने बहुत अच्छा है वाह बाबा वाह! हमारे मन में ये आना चाहिए कितना सुन्दर बाबा भोजन खिला रहा है। कोई भी दृश्य देखा वाह बाबा कितना सुन्दर दृश्य है। जो इस तरह से अभ्यास करता है, अच्छी बातों में वाह-वाह निकलना स्वाभाविक है लेकिन जब ये एक संस्कार बना देंगे तो कोई भी परिस्थिति, समस्या भी आयेंगी तो भी पहला अन्दर से वो ही निकलेगा कि वाह! बहुत सुन्दर। जैसे ही बहुत सुन्दर निकला तो अन्दर फिर आयेगा अरे, तो जो गुस्सा उस वक्त आना चाहिए था, लेकिन नहीं आता। क्योंकि वाह कहने से जैसे पॉज़िटिविटी अन्दर में आयी तो ज्ञान स्वरूप हो गये ना! क्योंकि बाबा ने यह कहा है कि हर दृश्य के अन्दर कल्याण समाया हुआ है। तो फिर हमारा देखने का नज़रिया बदल जायेगा। निगेटिव दृष्टिकोण से देखने की बजाय फिर हम पॉज़िटिव दृष्टिकोण से देखना शुरु करेंगे कि वाह! तो मैंने कह दिया अब इसमें वाह! वाह! क्या चीज़ है, कैसे है ये वाह! वाह! क्या सिखाने आई है क्योंकि कोई भी परिस्थिति आती है तो वो आपको अनुभवी बनाने आती है, कुछ सिखाने आती है या कुछ देने के लिए, कोई अवसर देने के लिए आती है। कुछ न कुछ प्रदान करके जाती है। कोई सीख प्रदान करके जाती है, कोई अनुभव प्रदान

ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

करके जाती है। इसीलिए जैसे ही कोई दृश्य सामने आये और मुख से निकला वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! जैसे ही निकला फिर इसमें आप देखना शुरु करो कि इसमें वाह क्या था? तो आपको पता चलेगा कि ये परिस्थिति आई तो ये आते ही मुझे कौन-सा अवसर प्रदान करके गई। कौन-सी रियलाइज़ेशन देकर गई, कौन-सी सीख देकर गयी। किस बात में मुझे अनुभवी बनाकर गई। तो ये जितना अनुभव आप प्राप्त करते जायेंगे उतना अनुभव का फाउंडेशन मजबूत होता जायेगा और बाबा हमेशा कहते हैं अनुभवी जो बन जाता है वो आगे कभी धोखा नहीं खाता है।

परिस्थितियां तो अंत तक आनी हैं। तो पहले से ही अपने आपको छोटी-छोटी बातों में अनुभवी बनाते जाओ। अनुभवी बनते जायेंगे तो जब बड़े से बड़ी परिस्थितियां आयेंगी तो उस समय सहजता से, उस अनुभव के माध्यम से उसे हैंडल कर सकेंगे, उसे ओवरकम(नियंत्रित करना) कर सकेंगे। उसको पार कर सकेंगे और उस समय आपको बहुत खुशी अनुभव होगी। सचमुच ये बहुत काल का अभ्यास जो बाबा कहते हैं- ये बहुत काल से अभ्यास छोटी-छोटी बातों पर मैंने किया, ये अभ्यास मुझे काम आने लगा।

मैं अपना अनुभव आपको बताना चाहती हूँ कि मैंने इस बात का अभ्यास किया कि जो होता है ड्रामा कल्याणकारी है, कल्याणकारी है, तो मैं ऐसे ही जल्दी-जल्दी फास्ट चल रही थी, अचानक ठोकर लगी और गिर गई। और गिरते ही पैर फ्रैक्चर हो गया, पैर में दर्द भी है लेकिन गिरते ही पहला संकल्प यही आया कि ज़रूर इसमें कोई कल्याण है, जो आगे पता चलेगा क्योंकि ये अभ्यास किया हुआ था। तो सचमुच जो दर्द था उस दर्द को सहने की शक्ति आ गई, उसको ओवरकम करने की शक्ति आ गई। और उसी वक्त मुझे फ्लाइट पकड़नी थी और मधुबन आना था। तो इतनी अन्दर में हिम्मत और शक्ति आ गई कि नहीं, जाना है मुझे, वो कार्यक्रम रूकना नहीं चाहिए। और सचमुच यहाँ आने के बाद महसूस किया कि कितनी सारी बातें कल्याण की इसमें समाई हुई थी। इतना समय मुझे अपने लिए मिला, इतना अध्ययन करने का मौका मिला और दिल से निकला कि वाह! अगर ये फ्रैक्चर नहीं होता तो मुझे अपने आपको ब्रेक लगाकर, इतना अध्ययन करके इतनी प्राप्ति नहीं होती। लेकिन देखो क्या कल्याण था! तो बहुत अध्ययन करने को मिला, बहुत कुछ प्राप्त करने को मिला, अनुभवी बनते गये और बातों के लिए भी।

परभणी-महा.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के उद्घाटन कार्यक्रम में सांसद संजय जाधव, ब्र.कु. संदीप भाई, महंत जीवन दास जी महाराज, शिवसेना जिला प्रमुख विशाल कदम, ब्र.कु. अर्चना दीदी,परभणी, ब्र.कु. प्रणिता दीदी,पूर्णा आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

मंदसौर-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. उषा बहन को प्रशंसा पत्र एवं शील्ड देकर सम्मानित करते हुए कलेक्टर गौतम सिंह एवं जिला पंचायत अध्यक्ष प्रियंका गोस्वामी।

कोरबा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बी.ई.टी.आई.,साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड कोरबा में आयोजित 'तनाव प्रबंधन शिविर' में ब्र.कु. विद्या बहन ने सभी का मार्गदर्शन किया। बहन रश्मि ने योग-प्राणायाम का अभ्यास कराया। इस मौके पर राजेश कुमार राय,एटीओ प्राचार्य एवं चीफ माइनिंग मैनेजर ने भी अपने विचार रखे। एल.एस. कुमार ने बहनों का आभार व्यक्त किया।

तखतपुर-छ.ग.। बेलपान मेला में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विधायक रश्मि सिंह, कांग्रेस सचिव अध्यक्ष आशीष सिंह, सरपंच गरीबा यादव, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. निकिता तथा अन्य।

राजगढ़-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत 'सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा' विषय को लेकर 75 बाइकर्स द्वारा सुरक्षित भारत अभियान निकाला गया है। अभियान के जिला स्तरीय उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्वलित करते हुए कलेक्टर हर्ष दीक्षित, पुलिस अधीक्षक प्रदीप शर्मा, विधायक बापूसिंह तंवर, पूर्व विधायक रघुनंदन शर्मा, महिला बाल विकास के प्रोजेक्ट ऑफिसर विक्रम सिंह ठाकुर, कांग्रेस जिला महामंत्री राशिद जमील, भाजपा नेता मनोज हाड़ा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु बहन एवं ब्र.कु. सुरेखा बहन।

डभरा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत 'द्वादश ज्योतिर्लिंग झाँकी दर्शन' के उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बहन संयोगिता युद्धवीर सिंह जूदेव,वरिष्ठ भाजपा नेता, भूषण लाल वर्मा,अध्यक्ष,उपभोक्ता फोरम बिलासपुर, शिव अग्रवाल, अध्यक्ष, जिला चावल उद्योग खरसिया, किशन सुल्तानिया, कोषाध्यक्ष, कन्या महाविद्यालय तथा कन्या भवन खरसिया, ब्र.कु. मंजू दीदी,संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़ बिलासपुर टिकरापारा, ब्र.कु. राधिका बहन,सह संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़ रायगढ़ एवं जशपुर, ब्र.कु. नीलू बहन,संचालिका,पत्थलगांव तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

रीवा-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में स्वाति श्रीवास्तव,जिला महिला बाल संरक्षण अधिकारी, महिला बाल आयोग की सदस्य वरिष्ठ समाज सेविका ममता नरेन्द्र सिंह, अनुराधा श्रीवास्तव,विधान सभा सचिव,म.प्र., संध्या गौतम,वरिष्ठ समाज सेविका, डॉ. उषा किरण भटनागर, ब्र.कु. निर्मला दीदी तथा अन्य अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस मौके पर समाज के विभिन्न क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया।

राजकोट-रविरत्नापार्क(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दसवीं एवं बारहवीं के विद्यार्थियों के लिए आयोजित 'सक्सेस मंत्र' सेमिनार के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. नलिनी बहन, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. डिम्पल बहन, प्रो. केतन भाई पैठाणी तथा अन्य।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO: - 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan
Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail -omshantimedia.acct@bkivv.org **OR**
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

कितने न भाग्यशाली हम...

जो परमात्म श्रेष्ठ मत को समझ पाये...!

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी गीता दीदी,माउण्ट आबू

गतांक से आगे...

अकसर सेवा में या कोई यज्ञ कारोबार में कई बार ऐसा होता है कि हमारी अपनी बुद्धि से जो राय आती है क्योंकि हम सभी नम्बरवार ज्ञानी तू आत्मायें हैं। हमें भी अच्छे-अच्छे विचार आते हैं, कई बार हमारी मत भी सही होती है और निमित्त आत्मा के द्वारा मिली हुई मत भी सही होती है। लेकिन दोनों अलग-अलग हैं। मान लो ये गुलदस्ता है मैं कहूँगी कि यहाँ रखना अच्छा लगता है लेकिन आप कहेंगे कि नहीं यहाँ रखना अच्छा लगता है, अब दोनों मत अच्छी हैं। आपकी बुद्धि में जो आइडिया आया वो भी अच्छा है, निमित्त की बुद्धि में जो आया वो भी अच्छा है। तो आप कहेंगे कि किसका हम मानें? मेरी मानूं तो आप मनमत क्यों कहते हैं और निमित्त कहे वो ही श्रीमत है तो ऐसा क्यों? इस प्रकार के प्रश्न भी मन में आते हैं लेकिन उसका भी रास्ता सरल हैं। अगर सेवा के दो अच्छे विचार हैं, उन्नति के हैं, चाहे वो पुरुषार्थ के हों, या सेवा के हों दोनों विचार अच्छे हैं तो बाबा ने हमें जो श्रीमत दी है कि बाबा ने अपने कार्य के लिए यज्ञ की तरफ से जिस आत्मा को निमित्त बनाया है तो हमें उनको रिस्पेक्ट(सम्मान)

अगर सेवा के दो अच्छे विचार हैं, उन्नति के हैं, चाहे वो पुरुषार्थ के हों, या सेवा के हों दोनों विचार अच्छे हैं तो बाबा ने हमें जो श्रीमत दी है कि बाबा ने अपने कार्य के लिए यज्ञ की तरफ से जिस आत्मा को निमित्त बनाया है तो हमें उनको रिस्पेक्ट(सम्मान) देना चाहिए।

देना चाहिए। उनकी अच्छी मत को पहले स्वीकार करना चाहिए क्योंकि बाबा ने, यज्ञ ने, दादियों ने सेवा कारोबार के लिए उनको निमित्त बनाया है। जब हम ऐसे समझकर उनको, उनकी मत को सम्मान देते हैं तो वहाँ भी हमें श्रीमत के प्रमाण चलने में मूंझ नहीं होती। सबसे पहला श्रीमत पर चलने में जो विघ्न आता है वो हमारी अपनी बुद्धि के अभिमान का विघ्न आता है। हमें अपनी बुद्धि का जो नशा, इगो होता है वो सबसे बड़ा विघ्न होता है। इसलिए सबसे बड़ा समर्पण यही है कि हम अपनी बुद्धि को समर्पित करें और श्रीमत को स्वीकार करें तो बाबा की ये गैरन्टी है कि अगर हम श्रीमत पर चलेंगे तो रेस्पॉन्सिबल(ज़िम्मेवार) स्वयं बाबा है। अगर हम श्रीमत पर चलेंगे तो बाबा रूचि से मदद करते हैं, साथ देते हैं। तो हम श्रीमत पर चलें और बाबा के साथ का अनुभव करें। इसलिए बाबा अभी भी हमें सम्मुख आकर श्रीमत देते हैं, मुरली के द्वारा हमें श्रीमत मिलती है और दादियों के द्वारा उनका प्रैक्टिकल स्वरूप कैसा होना चाहिए वो हमें दिखाई देता है। तो श्रीमत है आध्यात्मिकता और उसकी आचरण में जब धारणा आती है तो हमारे अन्दर नैतिकता धारण होती है तो ये दोनों चीज़ें ऑटोमेटिक हमारे जीवन में आ जाती हैं।

जालना-महा.। स्थानीय ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र के वास्तुशांति के कार्यक्रम में उपस्थित स्वास्थ्य राज्यमंत्री राजेश टोपे को ईश्वरीय सौगात देते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी,संयुक्त प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़ तथा ब्र.कु. सुलभा दीदी।

सोनकच्छ-म.प्र.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' प्रोजेक्ट के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के ट्रान्सपोर्ट एंड ट्रैवल विंग के द्वारा 'सड़क सुरक्षा मोटरसाइकिल यात्रा' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए क्षेत्रीय विधायक सज्जन सिंह वर्मा, ब्रह्माकुमारीज़ इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता दीदी, देवास जिला सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता दीदी, एसडीओपी प्रशांत सिंह भदोरिया, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सोनाली बहन तथा नगर के गणमान्य नागरिक गण।

खजुराहो-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के अंतर्गत युवाओं के लिए आयोजित एक विशेष कार्यक्रम 'चलो चलें परिवर्तन पथ पर' के दौरान छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन, समाजसेवी पंडित सुधीर शर्मा, खजुराहो यूथ आइकन गौरव सिंह बघेल, बुंदेलखंड बैंक मैनेजर विजय रजक, होटल साइना प्रभारी चाली राजा, भाजपा मंडल उपाध्यक्ष रविंद्र पाठक, एसआईएस कमांडो अखिलेश शुक्ला, होटल श्रीराम टूरिज़्म होम ओनर वैभव ताम्रकार, हेल्थ क्लब जिम ओनर सचिन पाठक, युवा कांग्रेस नगर अध्यक्ष रवि सोनी, जिला उपाध्यक्ष कांग्रेस टीकाराम पाल, युवा कांग्रेस प्रवक्ता शैलेंद्र यादव, दंगल सिंह, पुष्पेन्द्र अवस्थी, अविनाश तिवारी, भाजपा मंडल महामंत्री विजय राज, दयाराम चौबे सहित नगर के अनेक युवा उपस्थित रहे।

छोटा उदेपुर-गुज.। शास्त्री बाग में गुजरात राज्य योग बोर्ड द्वारा आयोजित योग शिविर में योग बोर्ड के चेयरमैन शीशपाल जी, योगाचार्य लक्ष्मण जूनवानी, योग शिक्षक तुषार पटेल, राजेश पंचोली, घनश्याम जी और उनकी पूरी टीम ने सभी को योगासन, व्यायाम, प्राणायाम आदि सिखाया। इस मौके पर भाजपा के महामंत्री,पूर्व धारासभ्य प्रो. शंकर भाई राठवा, गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड,गांधीनगर के मेम्बर मुकेश भाई पटेल, डॉ. पारुल बहन, ब्र.कु. डॉ. मोनिका बहन, नर्सिंग कॉलेज की प्रिंसिपल श्रीमति भावना बहन, कॉर्पोरेटर श्रीमति नेहा बहन, महिला मोर्चा की अध्यक्ष श्रीमति सज्जन बहन राजपूत तथा बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया। तत्पश्चात् ब्र.कु. डॉ. मोनिका बहन ने शीशपाल जी को ईश्वरीय सौगात भेंट की एवं आशा प्रतिष्ठा चैरिटेबल ट्रस्ट दिल्ली द्वारा प्राप्त 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड 2022' को उनके हस्तों द्वारा प्राप्त किया व सेवाकेन्द्र में आने का निमंत्रण दिया।

मालेगाव-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा क्षेत्र में ईश्वरीय सेवाओं की स्वर्ण जयंती पर बालाजी लॉन्स में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, ब्र.कु. शकुंतला दीदी,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. मंगला दीदी,बुरहानपुर, ब्र.कु. रीटा दीदी,धुलिया, ब्र.कु. मीरा दीदी,पाचोरा, डिप्टी एस.पी. गजानन राजमाने,नागपुर, कृ.बा.स. के सभापति बंडू काका बच्छाव, मामको बैंक के चेयरमैन राजेन्द्र भोसले, डॉ. तुषार शेवाळे, सुनील गायकवाड, ब्र.कु. ममता बहन, डॉ. मनीषा कापडणीस तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे। इस मौके पर पचास वर्षों से ईश्वरीय धारणाओं में चलने वाले पाँच ब्र.कु. भाई-बहनों को सम्मानित किया गया। पंद्रह सौ भाई-बहनें कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

बीदर-रामपुर कॉलोनी। नवनियुक्त उपायुक्त गोविंद रेड्डी,आई.ए.एस. को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमंगला दीदी, ब्र.कु. सुनंदा, ब्र.कु. जयश्री बहन।

कामठी-महा.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आध्यात्मिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए निर्धार महिला पुरस्कार समिति की ओर से ब्र.कु. प्रेमलता दीदी को सम्मानित करते हुए जिला कलेक्टर श्रीमति आर. विमला, पूर्व राज्यमंत्री एड. सुलेखाताई कुंभारे तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

पन्ना-म.प्र.। शोभायात्रा का स्वागत करते हुए श्रीमति आशा गुप्ता,प्रदेश मंत्री,भाजपा महिला मोर्चा, श्रीमति उमा त्रिपाठी,प्रोफेसर,शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय पन्ना, ब्र.कु. सीता बहन,प्रभारी,स्थानीय उपसेवा केन्द्र तथा अन्य।

चरोदा-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित 'सड़क सुरक्षा अभियान' कार्यक्रम में महेन्द्र पांडे,आरपीएफ थाना प्रभारी रेलवे सुरक्षा बल, ब्र.कु. अदिति बहन,वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका रायपुर, शैलेन्द्र सिंह,ट्रैफिक पुलिस, पवन साहू,संचालक,मानसरोवर विद्यालय जांजगीर, विनय बघेल,थाना प्रभारी, ब्र.कु. शिवानी बहन आदि उपस्थित रहे।

गांधीनगर-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा गुजरात राज्य मानव अधिकार आयोग में 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी। इस दौरान ब्र.कु. कृपल बहन, ब्र.कु. मुलानी बहन, आयोग के सदस्य, एम.एच. शाह, जे.के. भट्ट, आईपीएस के.आई. कछिया, रजिस्ट्रार, प्रभारी, सचिव, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, आर.बी. ब्रह्मभट्ट अपर पुलिस महानिदेशक, विशेष सचिव, संयुक्त सचिव, निजी सचिव, अनुसचिव आदि विशिष्ट जन तथा ब्र.कु. महेन्द्र भाई,माउण्ट आबू मौजूद रहे।

इंदौर-कालानी नगर(म.प्र.)। बीएसएफ कैम्पस में 'सड़क सुरक्षा अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में बीएसएफ सीएसडब्ल्यूटी आईजी अशोक यादव, बीडब्ल्यूडब्ल्यूए अध्यक्ष श्रीमति लता यादव, ब्र.कु. जयंती दीदी, ब्र.कु. सुजाता दीदी, ब्र.कु. कविता दीदी, बाइकर्स तथा बीएसएफ के जवान।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। विश्व स्वास्थ्य दिवस पर चिकित्सकों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. रीना बहन, सीएमएचओ डॉ. विजय पथोरिया, जिला टीकाकरण अधिकारी मुकेश प्रजापति, डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल से डॉ. लता चौरसिया, डॉ. अरविंद सिंह, डॉ. महर्षि ओझा, डॉ. मनोज चौधरी, डॉ. विशाल श्रीवास्तव, डॉ. अभय सिंह, ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. माधुरी बहन, ब्र.कु. रमा बहन आदि उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य

बवासीर का इलाज... आपके घर में

आज के समय में बवासीर की समस्या 20-25 और 30-35 की उम्र के व्यक्ति को बहुत ही तेजी से हो रही है। जिसके दो मुख्य कारण हैं। सबसे पहले खाने में रेशे की कमी होना माना फाइबर की कमी होना। जो लोग वेजिटेबल, नट्स, सीड्स आदि नहीं खाते इसकी वजह से उनको कब्ज की समस्या हो जाती है और उसी की वजह से बवासीर की समस्या आना निश्चित होता है। दूसरा कारण ये होता है कि कम उम्र में सिगरेट, दारु का सेवन करना जिसकी वजह से उनका डायजेस्टिव सिस्टम खराब होने लगता है जिससे उनका खाना पच नहीं पाता और फिर बवासीर की समस्या होने लगती है। तो इसका हम एक घरेलू उपाय कर सकते हैं...

सबसे पहले आपको एक गिलास लेना है। और फिर आधा गिलास गुनगुना पानी लेंगे। फिर उसमें 1 चम्मच(टी स्पून) जीरा डालें। जीरे में कुछ ऐसे गुण पाए जाते हैं जैसे फाइबर, ओमेगा3, ओमेगा6, ओमेगा9 जो कि आपके पाचन को ठीक करता है और आपके खाने को अच्छे से पचाता है। फिर जीरे को अच्छे से मिक्स कर देना है। इसे 15-20 मिनट तक ऐसे ही छोड़ दें। और जब इसके सारे पोषक तत्व पानी में मिक्स हो जायेंगे तो आपको इस पानी को एक साफ गिलास के अन्दर छान लेना है। और दूसरा इंग्रेडिएंट्स जो आपको लेना है जोकि बेहद खास है और आपके घर पर आसानी से उपलब्ध होगा। वो है नींबू। नींबू में सिट्रिक एसिड, विटामिन सी, एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं जोकि आपकी पाचन क्रिया को ठीक करता है, आपके हेयर फॉल को रोकता है और आपके बालों में से डैंड्रफ को जड़ से समाप्त करता है। साथ ही साथ यह आपके मुंह की दुर्गंध को खत्म करता है। और यह आपकी बवासीर के अन्दरूनी मस्सों को जड़ से समाप्त करके आपकी पाचन क्रिया को ठीक करता है। तो आपको करना क्या है, आपको आधा नींबू ले लेना है और अपने इस पानी में मिक्स कर लेना है। अब आपको इसके अन्दर लास्ट और आखिरी इंग्रेडिएंट जो मिलाना है वो भी आपके घर पर आसानी से मिल जायेगा। वो है हमारी अजवायन का पाउडर। अजवायन के पाउडर में कुछ ऐसे पोषक तत्व होते हैं जो कि हम प्राचीन काल से इस्तेमाल करते आ रहे हैं,अपने पाचन क्रिया को ठीक करने के लिए। साथ ही साथ अपने मेटाबॉलिज़्म को स्ट्राँग करने के लिए। आपको अजवायन पाउडर जीरे का चौथा हिस्सा लेना है। फिर इन सभी को अच्छी तरह से मिला लें।

कब और कैसे लें...

इस नुस्खे को हर रोज़ एक बार सुबह खाली पेट लेना है और दूसरा शाम को लंच के एक से डेढ घंटे के बाद लेना है। इसे आपको एक सप्ताह तक करना है।

मंदसौर-म.प्र.। नयाखेडा बायपास पर ब्रह्माकुमारीज़ के अत्याधुनिक भव्य आध्यात्मिक राजयोग साधना केन्द्र 'विश्व सद्भावना भवन' के भूमिपूजन कार्यक्रम में इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता दीदी, भिलाई क्षेत्र की संचालिका ब्र.कु. आशा दीदी, उज्जैन क्षेत्र की संचालिका ब्र.कु. उषा दीदी, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा राज्यमंत्री हरदीप सिंह डंग, वरिष्ठ विधायक यशपाल सिंह सिसोदिया, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रियंका गोस्वामी, कलेक्टर गौतम सिंह, पुलिस अधीक्षक अनुराग सुजानिया, जिला पंचायत के सीओ कुमार सत्यम, मंदसौर आत्म कल्याण भवन की संचालिका ब्र.कु. उषा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

नवापारा-राजिम(छ.ग.)। संत समागम के दौरान मंचासीन हैं राज्यपाल सुश्री अनुसूइया उइके, गृह जेल लोक निर्माण पर्यटन धार्मिक न्यास राज्यमंत्री ताम्रध्वज साहू, विधायक अमितेश शुक्ला, महाराज राम सुंदर दास जी, महाराज गोवर्धन शरण जी, ब्र.कु. नारायण भाई तथा अन्य गणमान्य लोग।

धमतरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 13 दिवसीय 'सुरक्षित भारत-सड़क सुरक्षा मोटर साइकिल यात्रा' अभियान के दूसरे दिन ग्राम श्यामतराई, चन्दनबिरही एवं पुरुर में सड़क सुरक्षा का संदेश दिया गया। महिंद्रा शो रूम, मारुती शो रूम और हुंडई शो रूम में भी कार्यक्रम का आयोजन हुआ जहाँ महिंद्रा शो रूम के मैनेजर एस.के. मिश्रा, मारुती शोरूम के मैनेजर राकेश राव तथा हुंडई शो रूम के मैनेजर विनय मंडल ने अभियान की सराहना करते हुए अपने स्टाफ के लिए पाँच दिवसीय राजयोग मेडिटेशन कार्यक्रम कराने का संकल्प लिया।

मुम्बई-श्रीनगर(ठाणे वेस्ट)। डॉक्टर्स के लिए 'मेडिटेशन एज़ मेडिसिन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. ई.वी. स्वामीनाथन,मुख्य वक्ता, डॉ. जे.बी. भोर,प्रेसिडेंट,वागले इस्टेट डॉक्टर्स एसोसिएशन, डॉ. गिरीश प्रजापति,सेक्रेट्री,वागले इस्टेट डॉक्टर्स एसोसिएशन, डॉ. शम्भू सिंह,ट्रेज़र,वागले इस्टेट डॉक्टर्स एसोसिएशन, ब्र.कु. सीता दीदी,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य।

मुम्बई-मीरा रोड। दादी जानकी की पुण्य स्मृति में पीवीआर सीनेमैक्स थिएटर में डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाने के पश्चात् समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रंजन बहन, थिएटर के मैनेजर अफज़ल भाई, फिल्म प्रोड्यूसर ब्र.कु. शीत श्रीवास्तव तथा अन्य भाई-बहनें।

राजगढ़-चुरू(राज.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत सेवाकेन्द्र के तृतीय वार्षिकोत्सव के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए गायक देव शर्मा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन बहन तथा अन्य।

पुणे-रविवार पेठ(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ एवं भारती ब्लड बैंक धनकवडी के संयुक्त तत्वाधान में भारत की स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र के रजत जयंती महोत्सव वर्ष के तहत 'जागतिक आरोग्य दिन' के अवसर पर आयोजित 'रक्तदान शिविर' में डॉ. देशपांडे मैडम,अध्यक्ष,इंडियन मेडिकल एसोसिएशन पुणे, डॉ. राजेंद्र संचेती,उपाध्यक्ष,इंडियन मेडिकल एसोसिएशन पुणे, गणेश नलावडे,अध्यक्ष,राष्ट्रवादी कांग्रेस,कसबा ब्लॉक, ब्र.कु. रोहिणी बहन व अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ठाणे-नौपाडा(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा श्री रामजी देवस्थान,आपटा मंदिर जिसे 149 वर्ष पूर्ण हुए हैं वहाँ आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन कर सभी को परमात्म संदेश देते हुए ब्र.कु. रेखा बहन। हज़ारों लोगों ने प्रदर्शनी द्वारा ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया। साथ ही ब्रह्माकुमारी बहन ने मंदिर के ट्रस्टी एवं पुजारियों का सम्मान कर सौगात दी एवं मंदिर की तरफ से ब्रह्माकुमारी बहन को स्मृति चिन्ह, शॉल व श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

बेंगलुरु-चामराजपेट(कर्नाटक)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. लीला दीदी,उपक्षेत्रीय संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़,बैंगलोर सिटी, श्रीमति सविता,आई.पी.एस.,डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस,ट्राफिक नॉर्थ बेंगलुरु, श्रीमति श्रीदेवी,वुमेन हेल्प डेस्क ऑफिसर, श्रीमति उषा गणेश,वीरा वनिथे कितूर रानी चेन्नम्मा वुमेन कमेटी, बीटीएस नागराज,पूर्व कॉर्पोरेटर,बिन्नीपेट, बी.के. कोकिला चंद्रशेखर,पूर्व कॉर्पोरेटर, चामराजपेट, ब्र.कु. सावित्री बहन, ब्र.कु. पद्मा बहन तथा अन्य गणमान्य लोग।

व्यर्थ की सोच को करें खत्म...

बस... एक को सिलेक्ट करें

गतांक से आगे...

अब इसकी प्रैक्टिस करते हैं कोई एक पर्सन को चूज़ कर लीजिए अपनी लाइफ में और उसकी एक गलती जो आपको पता है उसके अन्दर वो गलती है, वो कमज़ोरी है, वो अवगुण है। वन पर्सन, वन हैबिट इतना ही चूज़ करना है अभी। ज़्यादा टाइम नहीं लगता दूसरों की सिलेक्ट करने में। अपनी चूज़ करने में फिर भी थोड़ा टाइम लग जाये, दूसरों की तो फ्रेश है ना हमारे माइंड में। क्योंकि रोज़ दिखाई देती है इसीलिए जल्दी याद आ जाती है। बहुतों की नहीं देखनी। सिर्फ एक की, एक आदत सिलेक्ट हो गई। अब सुपोज़ किसी के अन्दर सिम्पल आदत है कि वो टाइम पर अपने काम पर नहीं पहुंचते और किसी के अन्दर आदत है ऐसे ही बातें छुपा देते हैं उसको गोल-गोल घुमाकर, किसी बात को मोड़ देते हैं। क्योंकि ऑनेस्टी(ईमानदारी) नहीं है, ट्रांसपेरेन्सी (स्पष्टता) नहीं है, और कोई-कोई तो बहुत अच्छे से बड़े-बड़े झूठ भी बोलते हैं। कोई सही तरीके से नहीं करते हैं। कोई काम चोरी करते हैं और बोलते हैं कि हाँ कर देंगे, समय पर पूरा नहीं करते हैं। ऐसे तो लम्बी लिस्ट है बहुत सारी चीज़ों की। हमें इन लोगों के साथ काम करना भी है और करवाना भी है। लेकिन हमें अवगुण न रखना है, न ही देखना है। क्यों नहीं देखना है मान लो आपके ईर्द-गिर्द सिर्फ पांच लोग हैं सारा दिन में, सिर्फ पांच ही लोग और पांच ही लोग में एक कमज़ोरी भी है। ऐसे तो हमारे अन्दर ज़्यादा है लेकिन उन पांच लोगों में एक कमज़ोरी है और मैंने अगर पांच लोगों की एक-एक कमज़ोरी मन में रखी, मन में रखने का मतलब क्या है? मुझे दिखाई दे रहा है कि वो लेट आते हैं। मुझे सुनाई दे रहा है कि वो झूठ बोल रहे हैं।

आँखों और कानों तक देखना है, मन पर रखने का क्या मतलब है? उसके बारे में चिंतन करना कि बताओ इसको कितना समझाऊं, ये तो फिर झूठ बोलता है। ये सच बोलेगा कैसे, इसको कौन सुधारेगा, इस पर विश्वास किया कैसे जाये, हर बार सॉरी बोलता है लेकिन फिर भी! ये हमारी अपनी चर्निंग शुरु हो जाती है। मतलब हम उसके अवगुण का मंथन करते हैं। उसका झूठ वहाँ है वो दिखाई देगा लेकिन उसका मंथन मन में चलना शुरु होता है। हम अपने मन के अन्दर उसके अवगुण के बारे में बात करना शुरु करते हैं। तो अब वो जो कमज़ोरी

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

है वो आँखों में नहीं, कानों में नहीं वो मन में बैठना शुरु हो गई है। आँखों और कानों से देखेंगे ना तो कोई प्रॉब्लम नहीं आने वाली। वो तो दिखेगा ही लेकिन प्रॉब्लम कब आती है जब यहाँ(मन) पर आती है। हमने उसका चर्निंग करना शुरु किया तो मन पर,आत्मा पर दाग लगता है।

अब एक दिन में मुझे पांच लोग मिले और पांच लोगों में एक कमज़ोरी देखी तो मैंने पांच कमज़ोरियों का मन में चिंतन किया। अगर मैंने पांच कमज़ोरियों का एक दिन में चिंतन कर लिया तो मैंने आत्मा की शक्ति को घटा दिया। क्योंकि मेरे मन में निगेटिव चर्निंग चल रही है। अगर आप किसी की विशेषता का चिंतन करें तो आपके कितने थॉट चलते हैं ये भी चेक करना है। अगर आप किसी की अच्छाई का चिंतन करें ये बहुत अच्छे से काम करते हैं। एक लाइन, दूसरी लाइन ज़्यादा से ज़्यादा ये हमेशा से ही अच्छे से काम करते हैं। बस उसके बाद माइंड बोलना बंद कर देता है। दो लाइन से ज़्यादा नहीं निकलके आने वाला है, यहाँ फिर उसके बाद फुल स्टॉप हो जायेगा। लेकिन अगर आप उसकी कमज़ोरी का चिंतन करेंगे तो दो में ही नहीं फुल स्टॉप होता। पाँच, दस, बीस कभी-कभी तो रात को नींद ही नहीं आती। चिंतन क्या चल रहा है कि उसने मुझे ऐसा क्यों बोल दिया, उसने मुझे ऐसा कर दिया, ये है ओवर थिंकिंग। तो जिसको-जिसको भी ओवर थिंकिंग खत्म करनी है तो उसको ये देखना होगा कि ओवर थिंकिंग होती कब है! होती क्यों है! क्योंकि हम कमज़ोरी का चिंतन करते हैं ओवर थिंकिंग कभी भी अच्छी बात की हो ही नहीं सकती। ओवर थिंकिंग मिन्स निगेटिव थिंकिंग। तो ये ओवर थिंकिंग सिर्फ अब यहाँ आँखों में ही नहीं रहेगी वो हमारे शब्दों में भी आयेगी। हम बोलते-बोलते अपनी भाव-भावना भी उसमें थोड़ा-सा मिक्स कर देंगे। ये है ही ऐसा कितना भी समझाओ ये नहीं सुधरने वाला। किसी को कोई बात सुनायेंगे मान लीजिए वो ही ज्ञान की प्वाइंट डॉ. मोहित ने सुनाई, वो ही ज्ञान की प्वाइंट अभी मैं आपसे शेयर कर रही हूँ। लेकिन बताने के तरीके में थोड़ा अन्तर आयेगा। क्यों आयेगा? क्योंकि कोई भी बात आप किसी से भी सुनेंगे या किसी को भी सुनायेंगे तो भाव और भावना एड होती जाती है। वो बात वैसी की वैसी नहीं जाती जैसी होती है। हम दूसरे के माइंड पर भी वो गंद रख देते हैं और जैसे ही मन की थॉट को मुख पर लाये तो यहाँ मन पर रिकॉर्डिंग और हो गई। इसीलिए किसी की कमी-कमज़ोरी हमें दिखती है तो उसे हम अपने मन तक न आने दें, उसे वहीं खत्म कर दें। तब किया जा सकता है व्यर्थ की सोच को खत्म।

गुयाना-जॉर्जटाउन(साउथ अमेरिका)। गुयाना के प्रधानमंत्री,रिटा. ब्रिगेडियर मार्क फिलिप के साथ ज्ञानचर्चा कर प्रसाद भेंट करने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. किन्नारी मूर्ति तथा ब्र.कु सीता नारिने। इसके साथ ही ब्रह्माकुमारी बहनों ने प्रेसिडेंट चेम्बर में प्रसिडेंट मो.इरफान अली एवं वाइस प्रेसिडेंट भरत जगदेव से भी मुलाकात कर आध्यात्मिक चर्चा की।

ठाणे-नौपाडा(महा.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत विश्व स्वास्थ्य दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर' में डॉ. ताराचंद पवार,देवकमल हेल्थ केयर,ठाणे, डॉ. सुहास देशपांडे,एम.एस. ऑफथल.प्रॉफ.रामकृष्ण नेत्रालय, डॉ. हरीश केदार,फिज़ीशियन,यूनिवर्सल हॉस्पिटल, डॉ. आदित्य सदावर्ते,एम.एस. ऑर्थो.,ऑर्थोपेडिक सर्जन,काइज़ेन हॉस्पिटल, डॉ. त्रिपाठी,गायनेकोलॉजिस्ट,यूनिवर्सल हॉस्पिटल, ब्र.कु. रेखा बहन आदि उपस्थित रहे। थाइरॉयड कैम्प एसआरएल लैब अमित जी,मर्क फार्मा द्वारा, सीबीसी ब्लड टेस्ट पाथ विज़न लैब के चंद्रप्रकाश यादव तथा ब्लड शुगर व बोन डेन्सिटी टेस्ट प्रदीप जी,मैनकाइंड फार्मा द्वारा किया गया।

आष्टा-म.प्र.। शांति सरोवर परिसर में आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान एसबीआई के मुख्य प्रबंधक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कुसुम बहन व ब्र.कु. नीलिमा बहन।

जीरापुर-राजगढ़(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ग्राम खारखेड़ा में अंतर्राष्ट्रीय खुशी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में बिजली विभाग के सुपरवाइज़र रामेश्वर दांगी, भाजपा नेता रामेश्वर टाक, पटेल फूलसिंह गुर्जर, पूर्व बैंक मैनेजर अरविंद सक्सेना, ब्र.कु. मधु बहन,राजगढ़, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन,ब्यावरा, ब्र.कु. भायलक्ष्मी बहन,सारंगपुर, ब्र.कु. वैशाली बहन,पचोर, ब्र.कु. नम्रता बहन,जीरापुर तथा अन्य ब्र.कु. बहनें एवं भाई उपस्थित रहे।

भिलाई-छ.ग.। सूर्या नगर बस्ती में अग्निकांड में प्रभावित सैंकड़ों परिवारों के लिए राहत सामग्री खाद्यान्न एवं दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुओं के किट बैग्स देते हुए ब्र.कु. पूजा बहन।

ग्वालियर-म.प्र.। पुलिस ट्रेनिंग सेंटर तिघरा ग्वालियर म.प्र. में 'अवसाद से मुक्ति' विषय पर व्याख्यान हेतु ब्रह्माकुमारीज़ लश्कर ग्वालियर से मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. प्रहलाद भाई को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर पुलिस ट्रेनिंग सेंटर से अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अताउल्लाह सिद्की, उप पुलिस अधीक्षक राजीव चतुर्वेदी, इंस्पेक्टर हेमंत शर्मा, सहायक जिला अभियोजन अधिकारी एम.एल. गुप्ता, इंस्पेक्टर विजेन्द्र वर्मा सहित अनेकानेक उप निरीक्षक, कॉन्स्टेबल एवं पुलिस के जवान उपस्थित रहे।

लंदन। मैरियट होटल,ग्रोसवेनर स्क्वायर में एशिया वन मैगज़ीन द्वारा आयोजित 17वें एशिया यूरोप बिज़नेस एंड सोशल फोरम 2022 में होंडुरास के राजदूत महामहिम इवान रोमेरो-मार्टिनेज और निकारागुआ के राजदूत महामहिम गिसेल मोरालेस-एचवेरी द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग प्रशिक्षक डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को पिछले 33 वर्षों से राजयोग के प्रचार-प्रसार के लिए 'भारत के महानतम लीडर्स 2021-22' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जूनागढ़-गुज.। 'महिला सम्मेलन' का उद्घाटन करते हुए म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन की मेयर गीताबेन परमार तथा शहर की अग्रणी महिलाओं के साथ ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालिका ब्र.कु. दमयंती दीदी तथा ब्र.कु. बीना बहन।

जकातवाडी-सातारा(महा.)। सातारा विधानसभा सदस्य छत्रपति शिवेंद्र राजे भोसले को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शांता बहन। साथ हैं चंद्रकांत सणस,सरपंच,ग्राम पंचायत,जकातवाडी।

राजनांदगांव-छ.ग.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' प्रोजेक्ट के अंतर्गत 'अखिल भारतीय सड़क सुरक्षा जागृति अभियान' के उद्घाटन पर मोटर साइकिल यात्रा का शुभारंभ किया गया। शुभारंभ कार्यक्रम में जिला पुलिस अधीक्षक संतोष सिंह, यातायात प्रभारी गजेन्द्र सिंह, मुख्य वक्ता ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. रंभा बहन, ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. मुरलीधर सोमानी आदि उपस्थित रहे। बाइक रैली में 75 से अधिक भाई-बहनें शामिल हुए।

राजूला-गुज.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में अल्ट्रा टेक सीमेंट के प्रमुख मैनेजर जी.जी. राव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. अनु बहन।

परमात्म ऊर्जा

जितना लाइट की परसेंटेज ज़्यादा होगी। उतना ही सभी बातों में स्पष्ट देखने में आएगा। अगर लाइट की परसेंटेज कम है तो खुद भी पुरुषार्थ में स्पष्ट नहीं होगा और जिसको मार्ग बताते हैं वह भी सहज और स्पष्ट अपने मार्ग और मंज़िल को जान नहीं सकेंगे। जिसकी लाइट पॉवरफुल होगी वह न खुद उलझते न दूसरे को उलझाते हैं। तो अपने पुरुषार्थ और अपनी सर्विस से देख सकते हो कि जिन्हों की सर्विस करते हो उन्हों का मार्ग स्पष्ट होता है। अगर मार्ग स्पष्ट नहीं होता है तो अपनी लाइट की परसेंटेज की कमी है। कई खुद कभी कदम-कदम पर ठोकर खाते हैं और उनकी रचना भी ऐसी होती है। अभी आप एक-एक मास्टर रचयिता हो तो मास्टर रचयिता अपनी रचना से भी अपनी पॉवर को परख सकते हैं। जैसा बीज होता है वैसा ही फल निकलता है। अगर बीज पॉवरफुल नहीं होता है तो कहाँ-कहाँ फूल निकलेंगे, फल निकलेंगे लेकिन स्वीकार करने योग्य नहीं होते हैं। जो बहुत सुन्दर व खुश्बूदार होंगे, जो फल अच्छा होगा उनको ही खरीद करेंगे ना! अगर बीज ही पॉवरफुल नहीं होता है तो रचना भी तो वैसी ही पैदा होती, वह स्वीकार करने योग्य नहीं होती। इसलिए अपनी लाइट की परसेंटेज को बढ़ाइये। दिन-प्रतिदिन सभी के मस्तक और नयन ऐसे ही सर्विस करें जैसे आप का प्रोजेक्टर शो सर्विस करता है। कोई भी सामने आयेंगे वह चित्र आपके नयनों में देखेंगे, नयन देखते ही बुद्धियोग द्वारा अनेक साक्षात्कार होंगे। ऐसे साक्षात्कार मूर्त अपने को बनाना है। लेकिन साक्षात्कार मूर्त वह बन सकेंगे जो सदैव साक्षी की स्थिति में स्थित होंगे। उनके नयन प्रोजेक्टर का काम करेंगे। उनका मस्तक सदैव चमकता हुआ दिखाई पड़ेगा।

होली के बाद सांग बनाते हैं ना! देवताओं को सजाकर मस्तक में बल्ब जलाते हैं। यह सांग क्यों बनाते हैं? यह किस समय का प्रैक्टिकल रूप है? इस समय का। जो फिर आपके यादगार बनाते आते हैं। तो एक-एक के मस्तक में लाइट देखने में आये। विनाश के समय भी यह लाइट रूप आपको बहुत मदद देगी। कोई किस भी वृत्ति वाला आपके सामने आयेंगे। वह इस देह को न देख आपके चमकते हुए इस बल्ब को देखेंगे। जो बहुत तेज़ लाइट होती है और उसको जब देखने लगते हैं तो दूसरी सारी चीज़ छिप जाती है। वैसे ही जितनी-जितनी आप सभी की लाइट तेज़ होगी उतना ही उन्हों को आपकी देह देखते हुए भी नहीं देखने आएगी। जब देह को देखेंगे ही नहीं तो तमोगुणी दृष्टि और वृत्ति स्वतः ही खत्म हो जाएगी। यह परीक्षाएं आनी हैं। सभी प्रकार की परिस्थितियां पास करनी हैं।

रीवा-झिरिया(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शांति धाम सेवाकेन्द्र पर बुजुर्गों के लिए आयोजित 'बुजुर्ग समाज की धरोहर' कार्यक्रम में परिवार में रहने वाले हीरालाल अग्रवाल जी को 90 वर्ष पूर्ण होने पर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उनके परिवार के सदस्य, युवा वर्ग, नगर के सभी समाजसेवी, ब्र.कु. निर्मला दीदी तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

कथा सरिता

जहाँ इच्छाशक्ति है... वहाँ सफलता है

विल्मा रूडोल्फ का जन्म अमेरिका के टेनेसी प्रान्त के एक गरीब घर में हुआ था। चार साल की उम्र में विल्मा रूडोल्फ को पोलियो हो गया और वह विकलांग हो गई। विल्मा रूडोल्फ कैलिपर्स के सहारे चलती थी। डॉक्टरों ने हार मान ली और कह दिया कि वह कभी भी ज़मीन पर चल नहीं पायेगी।

विल्मा रूडोल्फ की माँ सकारात्मक मनोवृत्ति महिला थी और उन्होंने विल्मा को प्रेरित किया और कहा कि तुम कुछ भी कर सकती हो, इस संसार में नामुमकिन कुछ भी नहीं।

विल्मा ने अपनी माँ से कहा, "क्या मैं दुनिया की सबसे तेज धावक बन सकती हूँ?"

माँ ने विल्मा से कहा कि ईश्वर पर विश्वास, मेहनत और लगन से तुम जो चाहो वह प्राप्त कर सकती हो।

नौ साल की उम्र में उसने ज़िद करके अपने ब्रेस निकलवा दिए और चलना प्रारम्भ किया। कैलिपर्स उतार देने के बाद चलने के प्रयास में वह कई बार चोटिल हुई एवं दर्द सहन करती रही लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी एवं लगातार कोशिश करती रही। आखिर में जीत उसकी ही हुई और एक-दो वर्ष बाद वह बिना किसी सहारे के चलने में कामयाब हो गई।

उसने 13 वर्ष की अवस्था में टेनेसी राज्य विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया जहाँ उसे कोच एड टेम्पल मिले। विल्मा ने टेम्पल को अपनी इच्छा बताई और कहा कि वह सबसे तेज धाविका बनना चाहती है। कोच ने उससे कहा, "तुम्हारी इसी इच्छाशक्ति की वजह से कोई भी तुम्हें रोक नहीं सकता और मैं इसमें तुम्हारी मदद करूँगा।"

विल्मा ने लगातार कड़ी मेहनत की एवं आखिरकार उसे ओलम्पिक में भाग लेने का मौका मिल ही गया। विल्मा का सामना एक ऐसी धाविका(जुत्ता हेन) से हुआ जिसे अभी तक कोई नहीं हरा सका था।

पहली रेस 100 मीटर की थी जिसमें विल्मा ने जुत्ता को हराकर स्वर्ण पदक जीत लिया एवं दूसरी रेस 200 मीटर में भी विल्मा के सामने जुत्ता ही थी इसमें भी विल्मा ने उनको हरा दिया और दूसरा स्वर्ण पदक जीत लिया।

तीसरी दौड़ 400मीटर की रिले रेस थी और विल्मा का मुकाबला एक बार फिर जुत्ता से ही था। रिले में रेस का आखिरी हिस्सा टीम का सबसे तेज एथलीट ही दौड़ता है। विल्मा की टीम के तीन लोग रिले रेस के शुरूआती तीन हिस्से में दौड़े और आसानी से बेटन बदली।

जब विल्मा के दौड़ने की बारी आई, उससे बेटन छूट गई। लेकिन विल्मा ने देख लिया कि दूसरे छोर पर जुत्ता हेन तेजी से दौड़ी चली आ रही है। विल्मा ने गिरी हुई बेटन उठायी और मशीन की तरह तेजी से दौड़ी तथा जुत्ता को तीसरी बार भी हराया और अपना तीसरा गोल्ड मेडल जीता।

इस तरह एक विकलांग महिला(जिसे डॉक्टरों ने कह दिया था कि वह कभी चल नहीं पायेगी) विश्व की सबसे तेज धाविका बन गई और यह साबित कर दिया कि इस दुनिया में नामुमकिन कुछ भी नहीं।

बालागाम-गुज.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत 'आत्मनिर्भर किसान अभियान' के कार्यक्रम में ब्र.कु. गीता बहन,सेवाकेन्द्र संचालिका,भीनमाल,राज., ब्र.कु. रूपा बहन,सेवाकेन्द्र संचालिका,केशोद, वनिता बहन वाढर,जिला पंचायत सदस्या, प्रवीणा बहन पटेल,प्रमुख,जिला महिला मोर्चा, धीरुभाई चुडासमा,प्रमुख,केलवली मंडल, रमेश भाई रूपावटीया,प्रमुख,पटेल समाज, ब्र.कु. गीता बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

राजकोट-गुज.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के हैप्पी विलेज रिट्रीट सेंटर में इलेक्ट्रिक व्यापारियों के लिए 'खुशी का व्यापार' विषय पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में ब्र.कु. अंजू बहन ने सभी को खुशी के व्यापार के टिप्स दिये। तीस व्यापारी बंधुओं ने परिवार सहित कार्यक्रम का लाभ लिया।

जूनागढ़-गुज.। ब्र.कु. मणि बहन मोड़वाडिया,लंदन के जूनागढ़ सेवाकेन्द्र में आने पर आयोजित सम्मान कार्यक्रम में मेर समाज जूनागढ़ के अग्रणी भाई-बहनें, ब्रह्माकुमारीज़ गुजरात ज़ोन की एडिशनल चीफ ब्र.कु. दमयंती दीदी, ब्र.कु. बीना बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

पुणे-पिंपरी(महा.)। भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती के अवसर पर पिंपरी चौक और महानगरपालिका में उनकी प्रतिमा को माल्यार्पण कर अभिवादन किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. सुरेखा दीदी, पिंपरी चिंचवड कमिश्नर राजेश पाटील, समाज प्रबोधनकार शारदा ताई मुंडे, समाज सेविका संगीता तापकीर, रुपाली जगताप तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

कटनी-म.प्र.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान का उद्घाटन करते हुए ट्रैफिक पुलिस अधिकारी, ब्र.कु. रानी दीदी, सिविल लाइन सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी तथा ब्र.कु. भाई।

जानें ब्रह्मा की मानस पुत्री का आध्यात्मिक रहस्य

मम्मा के स्मृति दिवस पर...

सदा...

निर्भय और निश्चिंत

मातेश्वरी जी का तपोबल उच्च स्तरीय और अलोप था। जब कभी उनके पास जाना होता था तो ऐसा महसूस होता था कि वे योग की शक्तिशाली स्टेज में स्थित होकर पवित्रता एवं दिव्यता की किरणें प्रकीर्ण कर रही हों। उनके नयन स्थिर, चेहरे पर मुस्कुराहट और मुखमंडल दिव्य आभा को लिए हुए होता था। वे केवल ज्ञान द्वारा ही जन-जन की सेवा नहीं करती थीं बल्कि अपने तपोबल से और अपनी स्थिति से आत्माओं में बल भरती थीं और अपनी शीतलता से आत्माओं को शीतल कर देती थीं। उनके जीवन में अनेक घटनाएं ऐसी हुई जो भयावह एवं विकराल रूप धारण किए हुए होती थीं परंतु वे इस विविधता पूर्ण विश्व नाटक में अटल निश्चय होने के कारण सदा निश्चिंत रहती थीं। अन्यश्च, यदि बाबा ने उनको कोई ऐसा कार्य सौंप दिया जिसका उन्हें अनुभव न हो या वो बहुत कठिन हो तब भी उन्होंने कभी ऐसा नहीं कहा कि मैं इसे कैसे करूंगी! मैं तो इससे अपरिचित हूं। बल्कि उन्होंने सदा जी बाबा ऐसा कहकर इस ज़िम्मेवारी को स्वीकार किया और उसे सम्पन्न करके दिखाया।

श्रीमद्भगवद् गीता में कहा गया है कि परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से यज्ञ द्वारा सृष्टि रची। अनेक प्रकार के यज्ञों का उल्लेख करते हुए ये कहा गया है कि सब प्रकार के यज्ञों में से ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ है। निःसंदेह श्रेष्ठ अर्थात् सतयुगी दैवी सृष्टि की रचना के लिए परमात्मा ने ज्ञान यज्ञ की ही स्थापना की होगी। इसी बात को यों भी कहा जा सकता था कि परमात्मा ने ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की, परंतु ज्ञान शब्द के साथ यज्ञ शब्द को इसलिए जोड़ा गया क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान सुनने वाले लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की तथा तन-मन-धन आदि की ज्ञान यज्ञ में आहुतियां देते हैं। यदि आहुतियां न दी जाएं तो ज्ञान को यज्ञ की संज्ञा नहीं दी जा सकती। यज्ञ वो है जिसमें कुछ न कुछ दिया जाता है। इसलिए ज्ञान यज्ञ शब्द विश्व विद्यालय शब्द से अधिक महत्वपूर्ण है।

सरस्वती का जन्म कैसे हुआ?

यज्ञ के प्रसंग में ये कहा जाता है कि महाभारत में वर्णित द्रोपदी का जन्म भी यज्ञ से हुआ था इसलिए द्रोपदी को यज्ञसैनी भी कहा जाता है। इसी प्रकार विद्या की देवी सरस्वती का जन्म भी यज्ञ से हुआ माना जाता है। सोचने की बात है कि अग्निकुंड वाले यज्ञ से तो किसी मानवीय देहधारी का जन्म हो ही नहीं सकता क्योंकि अग्नि तो शरीर को जला देती है। ज्ञान रूपी अग्नि ऐसी है जो शरीर को भस्म नहीं करती। इससे शरीर का लौकिक जन्म तो नहीं होता परंतु इससे संस्कार और स्वभाव पवित्र हो जाते हैं और उनके शुद्धिकरण करने से नया मानवीय जीवन आरम्भ होता है। उसे मरजीवा जन्म कहा जाता है। इसे अलौकिक अथवा दूसरा जन्म भी कहा जाता है। ब्राह्मणों को भी द्विज इसलिए कहा जाता है(द्विज, जिसका दूसरा जन्म होता है) क्योंकि ज्ञान द्वारा दूसरा जन्म होता है। इसी तरह ही जगदम्बा सरस्वती का भी जन्म हुआ। इसका भाव ये है कि परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ज्ञानशाला की स्थापना की। अतः वहाँ ज्ञान से उनको नया जन्म मिला। शारीरिक रूप से तो पहले ही से वे निर्मल थीं परंतु ज्ञान द्वारा इनका मन, वचन और कर्म निर्मल अथवा कमल समान बना। इसलिए चित्रकार उन्हें कमलपुष्प पर आसीन दिखाते हैं। परंतु आज कोई भी विद्वान ये नहीं बता सकता कि ज्ञान की देवी सरस्वती का जन्म कैसे हुआ और प्रजापिता ब्रह्मा से उनका क्या सम्बन्ध है।

ज्ञान यज्ञ की रचना करने वाले ब्रह्मा ही को यज्ञ पिता कहा जाता है, जिन्होंने उस ज्ञान से नया जीवन बनाया, उन्हें ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियां कहते हैं। इस दृष्टिकोण से सरस्वती भी ब्रह्माकुमारी ही थीं, शास्त्रों में भी इसका गायन है।

मन-बुद्धि इत्यादि की बलि देने के कारण काली

ज्ञान यज्ञ में ब्रह्माकुमारों और ब्रह्माकुमारियों ने विकारों की आहुतियां डाली थीं और यथाशक्ति अपना तन-मन-धन दिया था। उससे ही वो यज्ञ चलता रहा और उससे अन्य ब्रह्माकुमारियां और ब्रह्माकुमार प्रगट होते रहे। तब वे नए ब्रह्मा-वत्स भी अपनी आहुतियां डालते रहे। तन और धन की आहुति डालना तो फिर भी सहज होता है परंतु मन की आहुति डालना अधिक कठिन होता है क्योंकि मन चंचल है। सरस्वती जी ने अपने मन की भी पूर्ण आहुति दी। उन्होंने अपना सर्वस्व प्रभु-अर्पण किया। मन और बुद्धि पूर्णतः परमात्मा को समर्पित कर दिए। इन दोनों की बलि के कारण वे काली कहलायीं। इस पुरुषार्थ में वे ब्रह्मा वत्सों में से अद्वितीय और अग्रगण्य थीं। इससे उनके मन, बुद्धि का संबंध पूर्णतः परमपिता परमात्मा से जुट गया और उनकी बुद्धि का मिलान परमपिता से हो गया। इसके फलस्वरूप उन्होंने अपने परिपक्व अनुभवों के द्वारा सभी यज्ञ-वत्सों को मातृवत रूप से ज्ञान की पालना दी। इसलिए वे यज्ञ माता कहलाईं। सभी नर-नारियों के प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भरा था इसलिए उन्हें जगदम्बा कहा गया, वरना स्थूल रूप में तो कोई भी सारे जगत की अम्बा नहीं होती।

ओम की ध्वनि करने वाली ओम-राधे, ज्ञान-वीणा वादन करने वाली सरस्वती और ज्ञान लोरी देने वाली माता जगदम्बा

सरस्वती नाम पड़ने से पहले उनका नाम राधा था। जब ओम मंडली नाम से ज्ञान यज्ञ का प्रारम्भ हुआ तो वहाँ वे ओम की ध्वनि किया करती थीं। देह से न्यारा होकर वे ईश्वरीय स्मृति में ऐसे मग्न हो जाती थीं, जो उनकी रूहानियत भरी वाणी सुनने वालों को भी देह से न्यारा कर ईश्वरीय प्रेम के भाव से विभोर कर देती थीं। तब उनमें से कुछेक को दिव्य दृष्टि प्राप्त होती और वे श्रीकृष्ण का साक्षात्कार भी करते थे तब लोगों ने उन्हें राधा की बजाय ओम राधे का नाम दिया। उन दिनों जब कभी ब्रह्मा बाबा दूसरे नगर में चले जाते तो वहाँ से ज्ञान के पत्र लिखकर ओम राधे के पास भेजते थे तब वे उन पत्रों को ही पढ़कर ज्ञान सुनाया करती थीं। उनकी वे विस्तृत व्याख्या करती थीं। सुनने वालों को ऐसा लगता था कि वे ज्ञान की लोरी दे रही हैं अथवा ज्ञान गीत सुना रही हैं और वे उन्हें माता शब्द से संबोधित करने लगे या मम्मा कहने लगे।

पवित्रता के कारण हंगामा, मातेश्वरी द्वारा योग तपस्या से सामना

सब श्रोता उनके द्वारा सुनाये ज्ञान से इतने प्रभावित होते थे कि उनकी मधुर वाणी सुनने वालों ने प्याज, लहसुन, मांस, मछली, अंडे, शराब, सिगरेट, बीड़ी इत्यादि सब छोड़ दिए थे। इससे तब सिन्ध में काफी हलचल हुई थी। यहाँ तक कि लोगों ने एक बार पिकेटिंग भी कर दी थी परंतु मातेश्वरी सरस्वती जी ने सभी वत्सों को ऐसा अनुशासित किया था कि पिकेटिंग करने वाले भी प्रभावित हुए और उन्होंने अपना धरना उठा लिया। कुछ विरोधी तत्वों ने न्यायालय में भी अभियोग चला दिया परंतु वहाँ भी मातेश्वरी जी ने निर्भय, निश्चिंत, निःस्वार्थ और निर्मल स्थिति के द्वारा सबका सामना किया। उस दौर में विश्व के इतिहास में उनके जैसी आयु वाली कोई और कन्या नहीं होगी, जिसने इस प्रकार की विषम परिस्थिति का सामना किया होगा। परमपिता परमात्मा द्वारा दिए गए ज्ञान में अनेकानेक नवीनताएं होने के कारण जगह-जगह स्वार्थी तत्वों ने उनका घोर विरोध किया और हल्ला भी किया परंतु मातेश्वरी सरस्वती निश्चिंत, निर्भय और नम्रचित्त नहीं रहीं। जिस किसी विरोधी ने उन्हें देख लिया या उनसे थोड़ी बातचीत की वे उनके प्रशंसक बनकर रह गए। इस प्रकार मातेश्वरी जी की स्थिति संसार के आकर्षणों से ऊंचा उठकर शिवबाबा के आकर्षण क्षेत्र में रहती थी। इसलिए उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली और रूहानी आकर्षण से भरा था। उनकी वाणी में मधुरता थी और उनके बोल मन को शांत करने वाले तथा मन में शक्ति संचारित करने वाले होते थे।

योग सिर्फ उससे जो स्थिर हो

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

आज एक बहुत बड़ा प्रश्न ये उठता है कि इस दुनिया में सभी लोग कहते हैं कि हम मेडिटेशन करते हैं, हम योग करते हैं। लेकिन मेडिटेशन और योग इन दोनों को समझने के लिए इस बात पर बहुत गहन विचार करने की आवश्यकता है कि इस दुनिया में जो भी योग की पद्धतियां डेवलप(विकास) की गईं, बनायी गईं कुछ न कुछ ऐसी बातें हैं जो किसी बात को लेकर कभी आलोचना करती है, कभी कहते ये सत्य है, कभी कहते ये सत्य नहीं है। जैसे कहा जाता है कि हमारा शरीर पाँच तत्वों से बना हुआ है और शरीर के पाँचों तत्व स्थिर नहीं हैं, अस्थिर हैं। निरन्तर गतिमान हैं जिसको अगर और ज़्यादा इलेक्ट्रॉनिक भाषा में कहा जाये तो न्यूट्रॉन, प्रोटॉन इलेक्ट्रॉन की जो लैंग्वेज है उसमें ये फुल टाइम चारों तरफ ये कण एक कक्षा से दूसरी कक्षा में घूमते रहते हैं। इसका मतलब ये है कि फुल टाइम हमेशा जितने भी तत्व हैं वो मूव कर रहे हैं, गतिमान हैं, आगे बढ़ रहे हैं।

अब इस दुनिया में जब भी कोई मेडिटेशन की बात करता है तो ये कहता है कि मैं किसी देवी के सामने जाकर योग लगाता हूँ, किसी देवता के सामने, किसी मूर्ति के सामने, किसी गुरु के सामने या फिर प्रकृति के बीच बैठ के योग लगाता हूँ। तो आपको और हमको तुरंत एक बात पर विचार करना चाहिए कि जो चीज़ इस दुनिया में प्रकृति से बनी हुई है वो तो निरंतर गतिमान है, निरंतर आगे बढ़ रही है, इधर-उधर घूम रही है। तो जो चीज़ घूम रही है, जो चीज़ अस्थिर है, जो चीज़ बदल रही है उसके साथ हम योग कैसे लगा सकते हैं! उसके साथ हमारा जुड़ाव कैसे हो सकता है! आप कभी भी किसी मूर्ति को या किसी भी पत्थर को या किसी भी ऐसी चीज़ पर अपने आप को स्थिर करके देखो तो आपकी आंखें इधर-उधर भागती हुई नज़र आयेंगी। आप उसको एकटक तरीके से नहीं देख सकते कभी भी। कारण उसका क्योंकि यहाँ सबकुछ अस्थिर है। सबकुछ मूव कर रहा है। एक हमारी ऊर्जा है फिज़िकल एनर्जी (शारीरिक ऊर्जा) इसको भी अगर आप सूक्ष्मदर्शी से देखेंगे तो चारों तरफ ये सारे कण घूम रहे हैं। तो प्रश्न उठता है कि इस दुनिया में कोई मेडिटेशन नहीं करता है क्या? तो जवाब ये होगा कि शायद नहीं करता है। क्योंकि अगर वो मेडिटेशन करता तो वो स्थिर होता चला जाता।

आज बड़े-बड़े जो अपने आपको तपस्वी कहते हैं, बड़े-बड़े ध्यानी, योगी कहते हैं वो भी छोटी-छोटी बातों में या बड़ी बातों में परेशान हो जाते हैं। किसी बात को लेकर या यहाँ की दुनिया को लेकर कुछ उनका जाता है तो उसके लिए बहुत दु:खी होते हैं। लेकिन योग की परिभाषा जो परमात्मा ने हमें बताई वो शरीर से बिल्कुल भिन्न है, प्रकृति से बिल्कुल भिन्न है, प्रकृति के तत्वों से बिल्कुल अलग है। उन्होंने बताया कि इन पाँच तत्वों से जो पार दुनिया है जिसको हम छठा तत्व कहते हैं, या ब्रह्म तत्व कहते हैं, जहाँ पर परमात्मा का निवास स्थान है। उसके साथ वो स्थिर है और वो स्थान भी स्थिर है और हम सबको स्थिर बनना है। जब स्थिर चित्त से परमात्मा के साथ हमारा जुड़ाव होता है तो उसको हम वास्तविक योग की उपाधि दे सकते हैं। और है भी वही वास्तविक योग। तो योग का मतलब है कि जो हमको स्थिर करे। लेकिन आज हम योग करने के लिए कहते हैं कि दिनभर योग करते हैं, मेडिटेशन करते हैं, ध्यान लगाते हैं तो ध्यान-योग करने वाला ध्यानी-योगी जो होगा

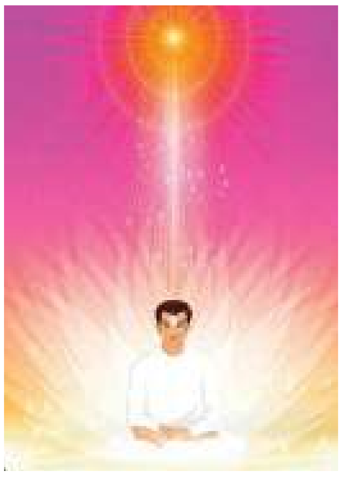

वो कभी भी किसी बात से, किसी भी यहाँ की चीज़ों के जाने से परेशान नहीं होगा। अगर वो हो रहा है तो उसका निश्चित प्रकृति से योग है। समाज से योग है, स्थूल वस्तुओं से योग है और-और चीज़ों को प्राप्त करने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाकर उससे अपने आपको जोड़ता जाता है, और कहता है कि हम मेडिटेशन कर रहे हैं।

मेडिटेशन दो ऐसी स्थितियों का वर्णन है जिसमें कहा जाता है एक जगह एक आत्मा और दूसरा परमात्मा। मतलब कहा जाता है कि दो ऐसे तत्व जो बिल्कुल ही इस दुनिया से अलग हैं। एक को आत्मा कहा और दूसरे को परमात्मा कहा। और दोनों सत्य हैं, दोनों अनादि हैं, दोनों हमेशा हैं, अन्तर ये है कि जो आत्मा है वो ऊपर से आई और इधर नीचे प्रकृति के साथ जुड़ने के बाद धीरे-धीरे तत्वों के साथ जुड़ती चली गई। और अपने आपको भूल जाती है लेकिन जो परमात्मा है वो निरन्तर स्थिर है। अनादि रूप से स्थिर है। हमेशा है, हर वक्त हर समय है। उसके साथ जब हमारा योग जुड़ता है तो हमारी बुद्धि स्थिर होती चली जाती है। अब वैज्ञानिक इस बात को नहीं मानते या कोई भी जो बहुत बड़ा इसका जिज्ञासु है या जो अपने आपको फिलॉसफी(दर्शन शास्त्र) के साथ जोड़ते हैं कि मैं इस बात को नहीं मानता। तो मान भी नहीं सकते उसका कारण ये है कि जितने भी वैज्ञानिक हैं या जितने भी रिसर्च करने वाले लोग हैं वो इन मूल तत्वों की बात करते हैं जो आज-कल प्रकृति में हैं। इससे ऊपर वो न कभी जा सकते हैं और न ही सोच सकते हैं। मैटर(पदार्थ) की बात करते हैं। मैटर मतलब जो निरंतर बदल रहा है, निरंतर गतिशील है। और जो चीज़ पहले से पृथ्वी पर मौजूद है उसी की वो खोज करते हैं, और उसी पर वो रिसर्च करते हैं। तो विज्ञान तो इसके ऊपर कभी सोच ही नहीं सकता। ना सोचने का मतलब ये नहीं कि योग की वो अवस्था जो वो बता देंगे वही सही है। लेकिन सही कुछ और है जो परमात्मा ने आकर स्पष्ट किया कि इस दुनिया के मनुष्य चाहे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों वो परमात्मा को तब तक नहीं समझ सकते जब तक वो खुद न आके बताये।

जो मैटर की बात कर रहा है, जो भौतिक शास्त्र की बात कर रहा है, जो भौतिकी में है उस पराभौतिक शक्ति को समझने के लिए उसको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। इसलिए स्थिर और अनादि एक परमात्मा शिव निराकार ज्योति बिन्दु ही है। उसके साथ आत्मा का योग ही हमको स्थिर बनाता है और वो ही हमारे मोक्ष की अंतिम अवस्था है। जब हम परमात्मा के साथ जुड़ते हैं तो यहाँ की सारी चीज़ों का नाश हो जाता है। इसी को कहा जाता है मोक्ष। मोक्ष का मतलब 'मैं' का 'क्षय' हो जाता है। 'मैं' माना अहंकार और 'क्षय' माना नष्ट होना। जैसे ही 'मैं' का 'क्षय' हो जाता है माना हमको मोक्ष मिल जाता है। और उसके साथ मोक्ष मतलब जुड़ाव हमको इस दुनिया में अलग बनाता है। इसलिए योग की सही विधि है एक स्थिर आत्मा बनके परमात्मा को जैसा है, वो जो है उसी रूप में याद करना। क्योंकि यही वास्तविक योग है, यही वास्तविक स्थिति है।

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें

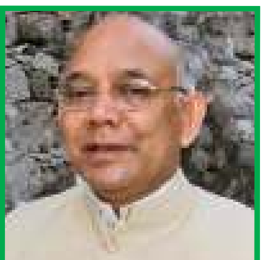

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : आजकल एक्सीडेंट बहुत बढ़ गए हैं जब मेरे पति और बच्चे घर से बाहर जाते हैं तो दिन में डर लगा रहता है कि कहीं कुछ हो न जाए, तो ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : एक्सीडेंट का कारण क्या है मन का भटकाव। मनुष्य गाड़ी कहीं चला रहा है और सोच कुछ और रहा है। फोन से बात कर रहा है। कोई चिंताओं में गाड़ी चला रहा है। ये सब तो कारण है ही। लेकिन आपको ये सब संकल्प समाप्त कर देना चाहिए। जैसे आपका बच्चा या पति बाइक चलाये या कार चलाये या आप साथ में कार में जायें तो साथ-साथ ये संकल्प करना और उन्हें भी सीखा देना कि जैसे ही यात्रा शुरु करें तो जैसे बोलते हैं ना हैप्पी जर्नी। तो यही संकल्प करें कि तुम्हारे साथ तो शिव बाबा है। तुम्हारी यात्रा पूर्ण सुरक्षित और सफल होगी। अपने मन में यही संकल्प करें कि ये दोनों बहुत सुरक्षित हैं। बिल्कुल सफल यात्रा करके आयेंगे।

मेरा बच्चा, मेरा पति शिव बाबा की छत्रछाया में है। वो सदा इनका रक्षक है, वो सदा इनके साथ है। ऐसे सुन्दर संकल्प करेंगे तो आपका भय भी समाप्त हो जायेगा और उनके पास आपके भी और शिव बाबा के भी गुड वायब्रेशन जाते रहेंगे। हरेक को सुबह उठकर ये अपना रूटिन बना ही लेना चाहिए पहले सात बार याद करें मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं निर्भय हूँ, मेरा जीवन निर्विघ्न है, मैं सफलतामूर्त हूँ, सफलता तो मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। ये सुन्दर संकल्प रोज़ सवेरे उठकर सात बार करने की आदत डाल दें। तो ये भय के संकल्प पैदा करने का जो एक संस्कार बन गया ना ये छूट जायेगा।

प्रश्न : क्या प्याज-लहसून का खाना खाते हुए हम राजयोग का अभ्यास कर सकते हैं या नहीं?

उत्तर : अगर राजयोग के माध्यम से हम उसके पास पहुंच रहे हैं मन-बुद्धि से तो हमारी वो दुर्गन्ध तो उनको भायेगी नहीं। इसलिए सफाई की दृष्टि से भी और एक रॉयल मैनर की दृष्टि से भी इन चीज़ों का सेवन वर्जित है क्योंकि राजयोग प्युरिटी से चलता है। शुरुआत ही इसकी वहाँ से है। परमात्मा पवित्रता के सागर हैं उससे बुद्धियोग लगाने के लिए, उससे मिलन करने के लिए उस व्यक्ति को प्युरिटी बढ़ानी चाहिए। ये सब चीज़ें तामसिक मानी जाती हैं। ये तमोप्रधान चीज़ें हैं। ये वासनाओं को बढ़ाती हैं इसलिए इनका त्याग करना ही अच्छा है और घरों में ये समस्या तो हर किसी को आती ही है लेकिन जो नियम हैं नियम हैं। अगर डॉक्टर कह दे कि आपको ये नहीं खाना तो तब भी तो हम मानते ही हैं ना! जब घर में ऐसी कोई प्रॉब्लम आती है दूसरे खाना चाहते हैं तो आप उनको तो बनाकर दे ही दो लेकिन खुद को अवॉयड करना चाहिए। कई बोलते हैं कि लहसुन मेडिसिन के रूप में उपयोग किया जाता है। लेकिन ऐसा नहीं है कि इससे ही ठीक होंगे। लोग खा भी रहे हैं लेकिन बीमारियां तो बढ़ती ही जा रही हैं। अपने अन्दर प्युरिटी बढ़ाने से सबकुछ अच्छा होगा। इस समय भगवान इस धरा पर कार्य कर रहा है तो हमें उसकी आज्ञाओं का पालन करना है। उससे बड़ा बुद्धिमान और उससे बड़ा परम सत्य का घाटक और कोई हो नहीं सकता। उसने आदेश दिया है कि ये सब तामसिक चीज़ें छोड़ दो। तुम देवों की संतान हो, तुम देव कुल की आत्मायें हों। तुमको देवत्व को प्राप्त करना है। इसलिए अब हमें भगवान की बात माननी है। हमें राजयोग के लिए, प्रभु मिलन करने के लिए, अपने जीवन को सुख-शांति से भरने के लिए कुछ समय छोड़ ही देना चाहिए।

प्रश्न : जब विशेष देवियों के दिन आते हैं तो लोगों में देवियों का प्रवेश होने लगता है, क्या ये सही है? अगर नहीं है तो वो सब कौन हैं? कृपया इसका जवाब मुझे बतायें क्योंकि देवियां जब आयेंगी तो कम से कम ऐसे तो नहीं करेंगी जैसे आ जाती हैं तो वो सिर हिलाने लगती हैं।

उत्तर : वास्तव में ये जो भटकती हुई आत्मायें हैं वो किसी में प्रवेश कर लेती हैं और कह देती हैं कि मैं देवी हूँ मुझे भोग खिलाओ, मुझे ये खिलाओ, मुझे वो खिलाओ। ये अतृप्त आत्मायें हैं। जब मनुष्य थे तब इनकी इच्छायें अधूरी रह गई होती हैं, तब वो उन्हें मिलता नहीं था इसीलिए वो उसकी डिमांड करते हैं। ये कोई भी देवियां नहीं होती। देवियां तो पवित्र होती हैं। जब देवियां आयें तो वातावरण में भी सुगन्ध छा जाए। वायब्रेशन बिल्कुल पवित्र हो जाये, देवी कोई सिर हिलाये या किसी को पटके, ऐसा-वैसा कहे ऐसा नहीं होता है। ये आत्मायें आती हैं जो इधर-उधर भटक रही हैं। इनमें कुछ अच्छी भी होती हैं मान लो किसी ने बहुत अच्छी साधनायें की हों और किसी कारण से उसे शरीर नहीं मिला, उससे कुछ पाप हो गया। वो लोगों को मदद करती हैं, उनका उपचार करने में मदद करती हैं। कोई विधियां बता देती हैं। कोई छोटे-मोटे बिगड़े काम ठीक करा देती हैं। किसी का बच्चा खो गया वो बता देती हैं कि कहाँ हैं क्योंकि वो बॉडीलेस हैं ना,उसको सब दिखता है। इसको तो लोग समझते हैं कि वो तो बहुत बड़ी शक्तियां हैं। वास्तव में वो सबकुछ नहीं होता है। राजयोग तो सबसे मुक्त रखता है। ये तो बहुत छोटी चीज़ हो गई। भक्ति जैसे मैंने कहा क्योंकि तमोप्रधान हो गई है। उसका ये स्वरूप है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

सहज योग कठिन कैसे बन गया...!!!

सहज योग बहुतों के लिए कठिन हो गया है। क्यों योग नहीं लगता? क्योंकि व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं। कहाँ से आ गये वो? अपने आप आ गये या हमने ही बनाये हैं? हम क्रियेट करते हैं, ये बात सभी को समझ लेनी चाहिए। दूसरी बात, क्यों सहज योग कठिन हो गया है? क्योंकि योग के लिए मन में श्रेष्ठ विचार और बुद्धि स्वच्छ होनी चाहिए। ये बहुतों की नहीं है। सोचना है सभी को। स्वयं ज्ञान के सागर आकर हमें रोज़ पढ़ा रहे हैं। पढ़ा रहे हैं या नहीं! मुरलियों में सुंदर विचार ही तो हैं। मुरलियों में वो विचार हैं जिनका संसार को अंदाज़ा भी नहीं है।

रोज़ बाबा कहते हैं, तुम निर्विकारी देवता थे। संसार में कोई शास्त्रवादी, वेदविद कोई नहीं जानता कि हम सतयुग में निर्विकारी देवता थे। ये श्रेष्ठ विचार है या नहीं! अगर इस विचार को दिन में थोड़ा-थोड़ा भी याद करेंगे तो अनेक व्यर्थ समाप्त हो जायेंगे। बुद्धि तीसरा नेत्र है। बुद्धि है विवेक शक्ति। जिसमें ज्ञान भर रहा है। अब ज्ञान की जगह किसी ने गंदगी भर ली हो, विवेक की जगह नफरत भर ली हो, ईर्ष्या-द्वेष भर ली हो, चिंतायें और परेशानियां भर ली हों तो बुद्धि स्थिर होगी नहीं। ये नेत्र है हमारा। इसमें हम सबकुछ धारण भी कर रहे हैं। इसलिए बुद्धि की एक और डेफिनेशन, बुद्धि हमारी धारणा शक्ति भी है। जो कुछ भी धारण हो रहा है, पवित्रता, शक्तियां, सद्गुण, ज्ञान, वरदान, वो सब किसमें हो रहा है? बुद्धि में हो रहा है। तो हमने अपनी बुद्धि को सोने का बर्तन बनाया है या डस्टबिन? विचार कर लेना। डस्टबिन बना लिया होगा तो क्या फैलेगी? बदबू फैलेगी। और जहाँ बदबू फैलती हो वहां भगवान का वास होगा! लोगों ने तो ऐसे ही कह दिया, सब जगह है, कूड़ेदान में भी है भगवान। बैठेगा वहाँ! तो हमें पहला काम करना है, अगर योगी बनना है तो अपनी बुद्धि की सफाई करें। समझ लें, योग के बिना, अगर योग शक्तिशाली नहीं होगा, अगर योग चार घंटे तक नहीं होगा, बाबा तो मुरलियों में कहते कि बच्चे, कम से कम आठ घंटे मुझे याद करो, और सुनते ही हम क्या कह देते हैं कि ये अपने बस का नहीं है। हमें पता भी नहीं चलता कि हमने क्या सोच लिया! कह देते हैं या नहीं! इसलिए मैं चार घंटे की बात करता हूँ। चार घंटे भी बैठकर नहीं, आप भले एक घंटा भी न बैठो, आप बिल्कुल न बैठो, तो भी योगी बन सकते हैं।

योग की सिम्पल डेफिनेशन, स्मृति स्वरूप होना ही योग है। इसके लिए बैठने की ज़रूरत नहीं। मैं देवकुल की निर्विकारी आत्मा हूँ, ये सोचने के लिए बैठना पड़ेगा क्या! बिल्कुल नहीं। ये स्मृति आई माना हम योगयुक्त हो गये। मैं भगवान की संतान बहुत महान और भाग्यवान हूँ, ये स्मृति आई माना हम योगयुक्त हो गये। सहज कर दो इसको। योगबल बहुत ज़रूरी है आने वाले समय का सामना करने के लिए। जिनके पास योगबल नहीं होगा, वो परिस्थितियों में रोते ही रह जायेंगे। वो जिंदे और मुर्दे समान हो जायेंगे। दुनिया का हाल तो बहुत बुरा होगा ही, क्यों होगा, क्योंकि सभी को घर जाने से पहले अपने कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करना ही होगा। कोई नहीं बच सकता। किसी को गाली भी दे दी है, उसका रिटर्न ज़रूर होगा। किसी का एक रुपया रख लिया तो सो देने पड़ेंगे ब्याज सहित। किसी को दु:ख दिया तो कई गुणा होकर वापस आ जायेगा। किसी का दिल दुखाया, बहुत कष्ट होगा। इससे कोई नहीं बच सकता। घबराने की बात नहीं, क्या करना है हमें, योगबल बढ़ाना है। विनाश की बाबा परिभाषा देते हैं, ये दुनिया खाली हो जायेगी, इस भंभोर को आग लगनी है। लगते हुए देख सकेंगे? ऐसी भयानक आग लगेगी जो बुझेगी नहीं। तो हमें योगबल की बहुत ज़रूरत है। योगबल जिसके पास होगा, कई धारणायें उनके पास हो जायेंगी।

योग है तो एक सहज योग ही, पर चलते-चलते मन के आकर्षण व बुद्धि के भटकाव ने उसे कठिन बना दिया। योग एक आनंद की अनुभूति का नाम है। किंतु हमारे लक्ष्य रूपी लगाम के विरुद्ध हमारी शक्तियों की लीकेज होने से ही योग असहज हो गया। अन्यथा योग तो अपने आप में ही सहज है। आइए जानते हैं उसको सहज बनाने के तरीके...

संतुष्ट आत्मा बनना है। इच्छाओं के पीछे दौड़ना, इच्छाओं की गुलामी छोड़नी है। क्योंकि जब तक हम कर्मेन्द्रियजीत नहीं बने तब तक सफल योगी नहीं बन सकते। कर्मेन्द्रियजीत, कानों से व्यर्थ सुनने पर विजय। और एक विजय बहुत ज़रूरी है जिसको लोगों ने बड़ा कठिन कहा है, स्वाद इंद्री पर विजय। जीभ पर विजय। मुख पर विजय। मुख माना बोलना। बोलने का अर्थ ये नहीं कि हम बोलें नहीं, लेकिन क्या बोलें। सब जानते हैं क्या बोलें। जैसे बोल हम दूसरों से सुनना चाहते हैं, वैसे ही बोल बोलना सीखें। सुखदायी बोल, जो दूसरों के दिल को ठंडा कर दें। तो योग के लिए कर्मेन्द्रियों पर विजय।

योग के लिए बहुत आवश्यक है आत्मिक प्रेम और शुभ भावनायें। मोह नहीं, मोह तो मनुष्य को उलझा देता है। आत्मिक प्रेम और सद्भावनायें। आत्मिक प्रेम कब बढ़ेगा? जब आत्मिक दृष्टि की प्रैक्टिस करेंगे। इसलिए सभी भाई-बहनें अपने-अपने घरों से ही शुरु करें। अपने बच्चों को तीन बार, पाँच बार, परिवार के सभी सदस्यों को आत्मा देखें भृकुटी में। छोटी-सी प्रैक्टिस है और बहुत काम की प्रैक्टिस है। सभी को जानना चाहिए। आत्मिक प्रैक्टिस से अनेक चीज़ें ठीक हो जाती हैं। आप तीन दिन कर के देख लें कि मुझे आज जो भी सामने आयेगा उसे आत्मा ही देखना है। शाम तक आपके व्यर्थ संकल्प समाप्त हो जायेंगे। दैहिक दृष्टि, ये नहीं कि हम बुरी दृष्टि से किसी को देख रहे हैं, लेकिन दिखाई तो देह ही देता है ना! ये दैहिक दृष्टि हमारे व्यर्थ संकल्पों को बढ़ा देती है और आत्मिक दृष्टि घटाती चलेगी। इसकी प्रैक्टिस करेंगे तो आत्मिक प्रेम बढ़ेगा और साथ में एक परिवर्तन सबको करना है, किसी के लिए भी नफरत नहीं। चेक कर लें अपने को। कोई ये नहीं कह सकता कि मुझे किसी के लिए नहीं है। नफरत से मुक्त आत्मा का चित्त शीतल और निर्मल हो जाता है। क्या करेंगे इस नफरत को खत्म करने के लिए? कुछ तो करना पड़ेगा तभी तो जायेगी न! आपे ही जायेगी, धीरे-धीरे चली जायेगी, आत्मिक प्रेम बढ़ जायेगा। अवगुण देखने से नफरत पैदा होती है। अब समस्या ये है कि अवगुण तो दिखाई देते हैं। अब कोई गुस्सा ही कर रहा हो और हम कहें कि दिखता ही नहीं है, ये होगा! वो तो दूर-दूर दिखाई देगा। बाबा ने कहा कि बच्चों की आवाज़ तो सूक्ष्म वतन तक आ जाती है, बाप तक। तो दिखाई देता है, परंतु हम क्या संकल्प करेंगे? ये इस आत्मा का अपना संस्कार नहीं है। ये तो रावण का संस्कार है। ये आत्मा तो निर्मल, पवित्र, प्रेम से भरपूर है। दृष्टि को बदलेंगे ज़रा। तो सबसे प्यार अगर पैदा करना है, खास ईश्वरीय परिवार में, तो संकल्प करेंगे कि ये सब महान आत्मायें हैं। ये सब ईष्ट देव-देवियां हैं। ये वो सब हैं जो भगवान से बहुत प्यार करते हैं और जिन्हें शिव बाबा बहुत प्यार करते हैं। तो प्यार बढ़ जायेगा। टाइम लग सकता है क्योंकि ये चीज़ें एक-दो दिन में नहीं आती हैं, पर अगर हम इसे दृढ़ता से करेंगे, तो धीरे-धीरे नफरत समाप्त होगी, चित्त शांत होगा, योग बहुत अच्छा लगने लगेगा।

बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। छत्तीसगढ़ योग आयोग द्वारा बिलासपुर संभाग के लिए लखीराम सभागार में आयोजित योग सम्मेलन एवं सम्मान समारोह में योग के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से ब्र.कु. मंजू बहन,पूर्व सदस्य,छ.ग. योग आयोग को यह सम्मान प्राप्त हुआ। समाज कल्याण राज्यमंत्री श्रीमति अनिला भेड़िया एवं योग आयोग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा के द्वारा दिए जा रहे इस सम्मान को ब्र.कु. समीक्षा बहन एवं ब्र.कु. गायत्री बहन द्वारा ग्रहण किया गया। साथ ही योग के क्षेत्र में सतत् कार्य करते हुए अन्य क्षेत्र में योगदान के लिए मस्तूरी एवं बिलासपुर क्षेत्र के लिए मास्टर योग प्रशिक्षक के रूप में ब्र.कु. गायत्री बहन, ब्र.कु. समीक्षा बहन एवं कुमारी रानी दीपाली को भी स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में योग आयोग सदस्य रविन्द्र सिंह, आई.जी. रतनलाल डांगी, छ.ग. प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश महामंत्री अर्जुन तिवारी, महापौर रामशरण यादव सहित अन्य महानुभाव उपस्थित रहे।

भुज-कच्छ(गुज.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत तपस्या भवन में 'आत्मनिर्भर किसान अभियान' का शुभारंभ करते हुए सांसद पुरुषोत्तम रूपाला, साध्वी शिलापीजी, विधायक प्रध्युमन सिंह जाडेजा, जिला पंचायत प्रमुख पारुल बहन कारा, नगरपति घनश्याम ठक्कर तथा अन्य गणमान्य लोगों के साथ ब्र.कु. रक्षा बहन व अन्य ब्र.कु. बहनें।

जकातवाडी-सातारा(महा.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में डॉक्टरेट शरयू भोसले,सेवानिवृत्त प्राध्यापिका को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शांता बहन। साथ में अन्य महिलायें उपस्थित हैं।

रीवा-म.प्र.। जगतगुरु श्रीमान राघवाचार्य जी,अयोध्या धाम के रीवा में आगमन पर स्वागत के पश्चात् उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्मला बहन, ब्र.कु. नम्रता बहन एवं ब्र.कु. प्रकाश भाई।

पूर्णा-परभणी(महा.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'नशा मुक्ति शिविर' में सुरेश गिणगीने,टीएचओ, अविनाश बेलोरे,एक्सटेंशन हेल्थ ऑफिस, सोनाली पैंजने,अकाउंटेंट,टीएचओ, हरिदास शिंदे,एमपीडब्ल्यू, रामजी बनसोडे, सुभाष चौरंगे,टीएचओ तथा ब्र.कु. प्रणिता बहन,सेवाकेन्द्र संचालिका,आनंद नगर पूर्णा,परभणी आदि उपस्थित रहे।

शेगांव-महा.। साई बाई मोटे शासकीय रुग्णालय के प्रांगण में नर्सेस स्टाफ को स्वास्थ्य प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु. कैलाश भाई।

बीदर-कर्नाटक। 'नशा मुक्त बीदर अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए मेडिकल एडवाइज़र एवं राजयोगा ट्रेनर ब्र.कु. डॉ. सचिन परब,मुम्बई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा दीदी, अति. पुलिस अधीक्षक महेश भाई, जिला तम्बाकू नियंत्रण अधिकारी डॉ. शंकरप्पा बोम्मा, कर्नाटक स्टेट गवर्नमेंट एम्प्लॉय एसोसिएशन के अध्यक्ष राजेन्द्र गंदगे, शहीन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के चेयरमैन डॉ. अब्दुल कादिर, स्काउट एंड गाइड के जिला संयोजक चालकापूरे जी, एनसीसी के अधिकारी प्रो. विट्ठल रेड्डी तथा वंदे मातरम पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्य रत्ना पाटिल।

रीवा-देवतालाब(म.प्र.)। मध्य प्रदेश शासन के पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं वर्तमान रीवा विधायक राजेन्द्र शुक्ल को ईश्वरीय संदेश व विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी का अवलोकन कराने के पश्चात् साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लता बहन।

नवसारी-गुज.। तपस्या नारी सेवा समिति चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित मीडिया पत्रकार सम्मान कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी बहनों को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर ट्रस्ट की ओर से पत्रकार भीमराव पाटिल को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. भानु बहन।

आध्यात्मिकता में है वैश्विक उत्थान की शक्ति

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के छोटे भाई पंकज मोदी का सेवाकेन्द्र पर हुआ आगमन

अपने सुखद अनुभव साझा करने के साथ ही उन्होंने सुरेन्द्र दीदी से लिया आशीर्वाद

सारनाथ-वाराणसी(उ.प्र.)। देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के छोटे भाई पंकज मोदी अपने वाराणसी प्रवास के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ के पूर्वी उत्तर प्रदेश मुख्यालय-ग्लोबल लाईट हाउस पहुंचे एवं संस्था की पूर्वांचल निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी एवं संस्था के क्षेत्रीय प्रबंधक राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र से मुखातिब हुए। इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी ने पंकज मोदी को शुभाशीष देते हुए कहा कि देश और विश्व के उत्थान हेतु आध्यात्मिकता को साथ लेकर आगे बढ़ना ही समय की मांग है।
पंकज मोदी ने कहा कि मानवीय मूल्य और आध्यात्मिकता ही श्रेष्ठ समाज की नींव है। स्वयं को एक आम नागरिक बताते हुए उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता और ब्रह्माकुमारी संस्था के साथ मेरा गहरा लगाव है। इसी आध्यात्मिक भाव और स्नेह के साथ मैं इस आध्यात्मिक परिवार में दीदी से आशीर्वाद लेने आया हूँ। राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र ने पंकज मोदी का स्वागत करते हुए कहा कि शांति और सद्भाव की गंगा से हम पूरे विश्व को आपसी एकता के सूत्र में बांध सकते हैं। मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. तापोशी बहन ने सभागार में निर्मित जीवनमूल्य आध्यात्मिक कला मंदिर का अवलोकन कराया। कला मंदिर का अवलोकन कर प्रफुल्लित पंकज मोदी ने संस्था द्वारा बेहतर समाज के निर्माण में किए जा रहे प्रयासों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस मौके पर पंकज मोदी के साथ ए.टी.एस. के उपाधीक्षक बिपिन राय, भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के सामाजिक वैज्ञानिक डॉ. आलोक कुमार, सुरत के प्रसिद्ध व्यापारी माणिक जैन, प्रो. धनंजय शर्मा,विधि संकाय महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी सहित अन्य गणमान्य लोग व ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे। वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. मोहन, ब्र.कु. राधिका बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनों ने तिलक व पुष्प देकर व संस्थान के पूर्वांचल मीडिया प्रभारी ब्र.कु. विपिन ने माला और अंगवस्त्र पहनाकर अतिथियों का स्वागत किया।

'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अन्तर्गत

'डायलॉग ऑन सेल्फ एम्पावरमेंट फॉर ओवरकमिंग'

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। जितना हम लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर कार्य करते हैं, उतना ही सफलता के सोपान प्राप्त करते हैं। उक्त विचार भारत सरकार के रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट ने ओम शांति रिट्रीट सेन्टर में ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'डायलॉग ऑन सेल्फ एम्पावरमेंट फॉर ओवरकमिंग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आत्मिक शक्ति के बल से ही हम रचनात्मक कार्य कर सकते हैं। हमारा परमात्मा की व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वे प्रयास करेंगे कि भारतीय सुरक्षा बलों के अधिक से अधिक अधिकारियों और जवानों को ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिए जा रहे प्रशिक्षण का लाभ मिले। त्रिदिवसीय कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में भारतीय नौ सेना के वाइस एडमिरल एस. एन. घोरमडे ने कहा कि 2011 से मैं ब्रह्माकुमारी बहनों के द्वारा सिखाये जा रहे राजयोग का अभ्यास कर रहा हूँ। योग से मेरे अन्दर स्थिरता आई है और कैसी भी परिस्थिति में निर्णय लेने की शक्ति बढ़ गई है। सुप्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी बहन ने कहा कि कोई भी समस्या उतनी बड़ी नहीं होती, जितना हम उसको सोचकर बढ़ा देते हैं। लेकिन जब हम स्व-स्थिति को बढ़ा देते हैं तो फिर कैसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते हैं। ओ.आर.सी की निर्देशिका ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि राजयोग द्वारा स्व-निरीक्षण कर हमें पुनः अपना आंतरिक सशक्तिकरण करना है। माउंट आबू से आये प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. अशोक गाबा, एनडीआरएफ के महानिरीक्षक एन.एस.बुन्देला, भारतीय सेना के सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल वी.जी.खण्डारे, भारतीय थल सेना के सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल ओम प्रकाश, भारतीय नौ सेना के वाइस एडमिरल दीपक कपूर, सेवानिवृत्त वाइस एडमिरल ए.के.चावला, नौ सेना में कार्यरत रियर एडमिरल गुरुचरण सिंह ने भी

अपनी शुभ भावनाएं व्यक्त की। ब्र.कु. दीपा बहन ने राजयोग द्वारा गहन शांति की अनुभूति कराई। भारतीय नौ सेना के कमाण्डर शिव सिंह ने सुरक्षा प्रभाग के सेवाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम का सफल संचालन भारतीय सेना में कार्यरत कर्नल सती ने किया। कार्यक्रम में काफी संख्या में भारतीय सेनाओं, अर्ध सैनिक बलों एवं पुलिस के अधिकारी व जवान शामिल रहे।

आओ चलें स्वर्णिम भारत की ओर... हुआ आगाज़

'स्वर्णिम भारत की पहचान आत्मनिर्भर किसान' अभियान को दिखाई हरी झंडी

कामठी-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'आओ चलें स्वर्णिम भारत की ओर...' अभियान का विधिवत उद्घाटन जिला परिषद् अध्यक्षा रश्मीताई बर्वे, विधायक टेकचंद सावरकर व ब्र.कु. प्रेमलता दीदी द्वारा किया गया। मानसिक स्वास्थ्य, स्वच्छता, श्रेष्ठ समाज निर्माण में युवाओं की भूमिका, चरित्र निर्माण के लिए महिलाओं का योगदान, किसानों को आत्मनिर्भर करना, पर्यावरण संरक्षण आदि विषयों पर लगभग 200 गांव में यह अभियान जाकर ईश्वरीय संदेश देगा एवं गोकुल गांव बनाने के लिए जनजागृति का कार्य किया जाएगा। इस अवसर पर ब्र.कु. प्रेमलता दीदी ने कहा कि हमारे देश को आज़ादी दिलाने वाले वीरों को नमन कर गौरव महसूस हो रहा है। साथ ही उन्होंने अभियान का कलश ब्र.कु. शीलू बहन को और शिव ध्वज वसंता भाई ठाकरे को देते हुए शुभकामनाएं दी। जिला परिषद् अध्यक्षा रश्मीताई बर्वे ने कहा कि गांव का विकास करने का काम हमारा है पर यह काम आप कर रहे हो, इसके लिए ब्रह्माकुमारीज़ धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने इस अभियान को वर्तमान समय की ज़रूरत बताया। विधायक टेकचंद सावरकर ने कहा कि क्षेत्र के विकास के लिए ब्रह्माकुमारी बहनों का बहुत बड़ा योगदान है और ऐसे संस्थाओं के योगदान के द्वारा ही समाज में नित नई क्रांति हो रही है। पूर्व विधायक देवरावजी रडके ने कहा कि प्रकृति के सहयोग द्वारा ही हम खेती करते हैं और प्रकृति को शुद्ध बनाने के लिए राजयोग मेडिटेशन बहुत ज़रूरी है। कार्यक्रम में रनाला गांव की सरपंच सुवर्णा साबळे, येरखेड़ा सरपंच मंगलाताई कारेमोरे, पूर्व सरपंच देवराव आमधरे आदि गणमान्य नागरिकों के साथ बड़ी संख्या में जनसमुदाय की उपस्थिति में अभियान को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। यह अभियान रनाला गांव में भ्रमण करते हुए एक महीने तक अपनी सेवाएं देगा।

किसानों को मिलेगा सही मार्गदर्शन

शाजापुर-म.प्र.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत भारत सरकार के निर्देश पर कृषि विज्ञान केन्द्र शाजापुर में आयोजित किसान मेले में ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे 'स्वर्णिम भारत की पहचान आत्मनिर्भर किसान' अभियान को सम्मिलित किया गया। इस मौके पर कलेक्टर दिनेश जैन ने कहा कि यह मेला किसानों को कृषि वैज्ञानिकों द्वारा सही मार्गदर्शन देने में सहायक सिद्ध होगा, किसानों को नई ऊर्जा प्रदान करेगा। भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष अंबाराम कराडा ने प्राचीन काल में होने वाली जैविक खेती के बारे में बताते हुए कहा कि वास्तव में धरती को बंजर बनाने में हम ही ज़िम्मेदार हैं और अब हमें ही धरती माता को जैविक खाद देकर उसकी उर्वरा शक्ति को बढ़ाना होगा। स्थानीय ब्रह्माकुमारी

सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूनम बहन ने कहा कि यदि हमें स्वर्णिम भारत बनाना है तो हमें हमारे किसान भाइयों को आत्मनिर्भर बनाना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य से संस्थान के 'स्वर्णिम भारत की पहचान आत्मनिर्भर किसान' विषय के अंतर्गत जिले के हर गांव में यह कार्यक्रम हो रहा है। जहाँ ब्र.कु. भाई-बहनें किसान भाइयों को शाश्वत यौगिक खेती से सम्बंधित जानकारी निःशुल्क प्रदान करते हैं। मौके पर किसान मोर्चा के नगर अध्यक्ष श्याम शर्मा, कृषि विज्ञान केन्द्र के संचालक एवं वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. जी.आर.अम्बावतिया, ब्र.कु. चंदा बहन, ब्र.कु.दीपक भाई, ब्र.कु. ममता बहन व बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनें उपस्थित रहे।

'आत्मनिर्भर किसान अभियान' द्वारा निश्चित ही आत्मनिर्भर बनेंगे किसान : विधायक

हाथरस-उ.प्र.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा 'आत्मनिर्भर किसान अभियान' का उद्घाटन तरफरा रोड स्थित कुशवाहा सेवा सदन में हुआ।
इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक बहन अंजुला माहौर ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों की कार्यशैली, विश्व कल्याण के प्रति इनका समर्पण और त्याग वास्तव में सराहनीय है। इस अभियान द्वारा निश्चित ही किसान आत्मनिर्भर बनेंगे। प्रभाग की आगरा ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. भावना बहन ने कहा कि आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आगरा क्षेत्र के अभियानों का उद्घाटन यहाँ

हो रहा है जिसमें अलग-अलग स्थानों से 22 अभियान किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए निकलेंगे और शाश्वत यौगिक खेती के बारे में जानकारी देंगे। मुख्य विकास अधिकारी साहित्य प्रकाश शर्मा ने कहा कि यहाँ आकर ऐसा महसूस हो रहा है कि एक दिन सतयुग आएगा और कलियुग जाएगा। आगे उन्होंने किसानों को सरकारी योजनाओं से लाभान्वित किया। पलवल से आये प्रभाग के सदस्य ब्र.कु. राजेंद्र भाई ने किसानों को शाश्वत यौगिक खेती के बारे में बताते हुए कहा कि इस 22 अभियान के अंतर्गत हर एक अभियान 75 गांव में जागृति का कार्य करेगा। जनपद प्रभारी ब्र.कु. सीता बहन ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। भरतपुर से आयीं आगरा ज़ोन सह प्रभारी ब्र.कु. कविता बहन ने कहा कि जब आत्मस्थिति में स्थित होकर परमात्मा से सम्बंध जोड़ते हैं, राजयोग का अभ्यास करते हैं तो मन, बुद्धि, संस्कार हमारे अधीन होते हैं और तब आत्मनिर्भरता बढ़ती है। कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष गौरव आर्य, जिला विकास अधिकारी अवधेश सिंह यादव, आगरा ज़ोनल प्रभारी ब्र.कु. शीला दीदी, माउंट आबू से छोटेलाल भाई, हरदुआगंज से फॉरेस्ट ऑफिसर सत्यप्रकाश, आशु कवि अनिल बौहरे, मुरसान के पूर्व चेयरमैन गिर्राज किशोर शर्मा, एसबीआई मैनेजर शंभू दयाल व अन्य वरिष्ठ भाई-बहनों ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में

विधायक द्वारा सभी अभियान यात्रियों को कलश व झंडा देकर सम्मानित किया गया

40 बाल ब्रह्मचारी तपस्वी राजयोगी कुमारों का सम्मान मुकुट, तिलक, बैज व पटका पहनाकर किया गया

कार्यक्रम में जनपद क्षेत्र के ग्राम प्रधान, किसान एवं अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th May, 2022
स्वामी - राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, प्रकाशक एवं सम्पादक - गंगाधर नरसिंघानी, मुद्रक - श्री मुकेश मंगल, डी.बी. कॉर्प.लि. द्वारा भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड(राज.)- 307510
See Latest News - www.omshantimedia.org